विश्व हिंदी समाचार
Vishwa Hindi Samachar

विश्व हिंदी सचिवालय, मॉरीशस का त्रैमासिक सूचना-पत्र

वर्ष : 11 अंक : 41 मार्च, 2018

विश्व हिंदी सचिवालय मुख्यालय का उद्घाटन

13 मार्च, 2018 को फ़ेनिक्स, मॉरीशस में विश्व हिंदी सचिवालय मुख्यालय के नवनिर्मित भवन का उद्घाटन किया गया। उद्घाटन भारत गणराज्य के राष्ट्रपति, महामहिम श्री राम नाथ कोविन्द के कर-कमलों द्वारा मॉरीशस गणराज्य के प्रधान मंत्री, माननीय श्री प्रवीण कुमार जगन्नाथ की उपस्थिति में सफलतापूर्वक संपन्न हुआ।

पृ. 2-3

विश्व हिंदी सचिवालय, मॉरीशस के आधिकारिक कार्यारंभ दिवस की 10वीं वर्षगाँठ

7 फ़रवरी, 2018 को विश्व हिंदी सचिवालय ने मॉरीशस के शिक्षा व मानव संसाधन, तृतीयक शिक्षा एवं वैज्ञानिक अनुसंधान मंत्रालय तथा भारतीय उच्चायोग, मॉरीशस के तत्वावधान में महात्मा गांधी संस्थान के सुब्रमण्यम् भारती सभागार में अपने कार्यारंभ दिवस की 10वीं वर्षगाँठ मनाई। इस उपलक्ष्य में सचिवालय ने अपने त्रैमासिक कार्यक्रम 'विचार-मंच' का भी आयोजन किया, जो 'काव्य-शिक्षण में गीतों का प्रयोग' विषय पर आधारित था।

पृ. 9-10

विश्व भर में विश्व हिंदी दिवस का आयोजन

10 जनवरी, 2018 को मॉरीशस, भारत, चीन, नेपाल, लंदन, मोज़ाम्बिक, रूस, नायरोबी, न्यू यॉर्क, सेशेल्स, शंघाई, सीरिया, थाईलैंड, श्रीलंका आदि देशों में विश्व हिंदी दिवस समारोह का भव्य आयोजन किया गया।

पृ. 3-9

'वैश्विक परिदृश्य में हिंदी' विषयक वैश्विक हिंदी संगोष्ठी

9 फ़रवरी, 2018 को मुंबई में वैश्विक हिंदी सम्मेलन तथा मुंबई रेल कॉर्पोरेशन के संयुक्त तत्वावधान में वैश्विक संगोष्ठी का आयोजन किया गया। मुख्य अतिथि एवं मुख्य वक्ता मॉरीशसीय वरिष्ठ साहित्यकार श्री रामदेव धुरंधर रहे।

पृ. 11

इस अंक में आगे पढ़ें :

सम्मेलन, संगोष्ठी, कार्यशाला, परिचर्चा, अधिवेशन, व्याख्यान, समारोह	पृ. 11-13
लोकार्पण	पृ. 13-14
पुरस्कार व सम्मान	पृ. 14-15
श्रद्धांजलि	पृ. 15
संपादकीय/सूचना	पृ. 16

ISSN 1694-2485

विश्व हिंदी सचिवालय मुख्यालय का उद्घाटन

13 मार्च, 2018 को फ़ेनिक्स, मॉरीशस में विश्व हिंदी सचिवालय मुख्यालय के नवनिर्मित भवन का उद्घाटन किया गया। उद्घाटन भारत गणराज्य के राष्ट्रपति, महामहिम श्री राम नाथ कोविन्द के कर-कमलों द्वारा मॉरीशस गणराज्य के प्रधान मंत्री, माननीय श्री प्रवीण कुमार जगन्नाथ की उपस्थिति में सफलतापूर्वक संपन्न हुआ। समारोह का आयोजन मॉरीशस सरकार द्वारा किया गया था।

इस अवसर पर शिक्षा व मानव संसाधन, तृतीयक शिक्षा व वैज्ञानिक अनुसंधान मंत्री, माननीया श्रीमती लीला देवी दूकन-लछूमन व मॉरीशस सरकार के अन्य माननीय मंत्रीगण, मंत्रालयों के स्थाई सचिव व अधिकारीगण, मॉरीशस के हिंदी विद्वानों, साहित्यकारों, लेखकों, प्रचारकों, प्राध्यापकों, छात्रों तथा हिंदी- प्रेमियों ने समारोह की शोभा बढ़ाई। महामहिम राष्ट्रपति के साथ आए हुए भारतीय प्रतिनिधिमंडल में भारत सरकार के मंत्रालयों के अधिकारीगण व पत्रकार इस समारोह में उपस्थित थे।

इस अवसर पर भारत गणराज्य के राष्ट्रपति, महामहिम श्री राम नाथ कोविन्द का वक्तव्य मॉरीशसीय जनता व विश्व हिंदी सचिवालय हेतु अत्यन्त प्रेरणादायक व प्रभावोत्पादक रहा। उन्होंने मॉरीशस की स्वतंत्रता की 50वीं वर्षगाँठ के समारोह पर प्राप्त आमंत्रण पर अपनी प्रसन्नता व्यक्त करते हुए शुभकामनाएँ दीं। भारत और मॉरीशस के संबंधों पर उन्होंने कहा कि *''इस अवसर पर मैं यह भी संकल्प दोहराना चाहता हूँ कि भविष्य में भी हम एक दूसरे का सहयोग करते हुए आपसी समर्थन जारी रखेंगे।''* महामहिम ने हिंदी भाषा की महत्ता पर भी बात की - *''भारत और मॉरीशस दोनों देशों के सामाजिक विकास में हिंदी की महत्त्वपूर्ण भूमिका रही है। हिंदी के माध्यम से विश्व भर में फैले आप्रवासी भारतीयों ने अपने संस्कारों और परम्पराओं को सहेजा है और आनेवाली पीढ़ियों को इससे जोड़ा है। इसी कारण आज हिंदी विश्व के एक बड़े समुदाय के जीवन में घुली-मिली है तथा 'वसुधैव कुटुंबकम्' की भावना हिंदी भाषा की सोच का हिस्सा है।''* साथ ही उन्होंने आप्रवासियों का उल्लेख करते हुए हिंदी के संघर्ष की बात की। उन्होंने हिंदी के प्रचार व उन्नयन हेतु भारत सरकार द्वारा किए जा रहे प्रयत्नों का उल्लेख किया - *''भारत सरकार में काम-काज और संवाद के अलावा विज्ञान, तकनीकी, संचार और सूचना प्रौद्योगिकी के क्षेत्रों में भी हिंदी को बढ़ावा देने के लिए प्रयत्न किए जा रहे हैं।''* महामहिम ने अपने संबोधन में मॉरीशस में तीसरी बार आयोजित होनेवाले 11वें विश्व हिंदी सम्मेलन पर मॉरीशस तथा भारत के बीच मैत्री संबंध को उजागर किया - *''यह सम्मेलन यहाँ तीसरी बार आयोजित होने जा रहा है जो आप सबके गहरे हिंदी-प्रेम का प्रमाण है।''* उन्होंने भारत सरकार के सहयोग से मॉरीशस में विभिन्न विकास परियोजनाओं के अनुसार किए जा रहे कार्यों का उल्लेख किया तथा भावनात्मक एकता के ठोस आधार पर टिके हुए इन दो देशों के संबंधों को मज़बूत बताया। भारत और मॉरीशस को वे संयुक्त परिवार के रूप में देखते हैं - *''विभिन्न भाषाओं और धर्मों के लोग शांति और सद्भावना के साथ रहते हैं। विभिन्नता में एकता हमारी सांस्कृतिक पहचान रही है।''* अपने वक्तव्य को समाप्त करते हुए उन्होंने कहा कि *''मुझे पूरा विश्वास है कि दोनों देशों की यह मित्रता और भी मज़बूत होगी और दोनों देशों के हिंदी प्रेमी इस प्रगाढ़ता को बढ़ाने में सहयोग करते रहेंगे।''*

मॉरीशस गणराज्य के प्रधान मंत्री, माननीय श्री प्रवीण कुमार जगन्नाथ ने इस समारोह में भाग लेने पर प्रसन्नता व्यक्त की। उन्होंने दो देशों की मित्रता व सहयोगपूर्वक संपन्न कार्यों पर बात की - *''मैं भारतीय सरकार के प्रति आभारी हूँ, जिन्होंने विकास, नवाचार तथा सहयोग हेतु महत्त्वपूर्ण भागीदारी निभाई।''* विश्व हिंदी सचिवालय के भवन-निर्माण के साथ भारत तथा मॉरीशस के संबंधों में आई सुदृढ़ता के विषय में उन्होंने कहा - *''फ़ेनिक्स में स्थापित सांस्कृतिक महत्त्व वाली यह उत्कृष्ट इमारत भारत और मॉरीशस के मज़बूत संबंध का जीता-जागता प्रतीक है।''* उन्होंने विश्व हिंदी सचिवालय की स्थापना पर बात की तथा आगामी 11वें विश्व हिंदी सम्मेलन की चुनौतियों का उल्लेख किया। उन्होंने बताया कि इस सम्मेलन द्वारा हिंदी लेखक, प्रकाशक आदि लाभान्वित होंगे। इसके अतिरिक्त इस समारोह में मॉरीशसीय सरकार द्वारा तैयार दो महत्त्वपूर्ण परियोजनाओं के लोकार्पण पर उन्होंने कहा कि *''मुझे खुशी है कि भारत से हमारे संबंध केवल भाषा एवं संस्कृति के क्षेत्र में ही नहीं, वरन् प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में भी सुदृढ़ हो रहे हैं।''* अंत में उन्होंने कहा कि भारत से मॉरीशस का संबंध व्यापार से कहीं आगे है तथा यह बहुआयामी जुड़ाव पैतृक संबंधों और पारस्परिक मूल्यों पर स्थापित है।

समारोह में भारतीय प्रतिनिधिमंडल से लोकसभा सदस्य, माननीय श्री हुकुम देव नारायण यादव ने अपने वक्तव्य में भारत तथा मॉरीशस के सशक्त संबंधों को रेखांकित किया। उन्होंने दो देशों को जोड़ने का श्रेय भाषा को दिया तथा मॉरीशस में आप्रवासियों के इतिहास की चर्चा भी की। उन्होंने भारत और मॉरीशस के ऐतिहासिक संबंधों पर अपने विचार व्यक्त करते हुए कहा कि - *''दो देशों में रहते हुए भी हमारे अन्तर्मन जुड़े हुए हैं।''*

शिक्षा व मानव संसाधन, तृतीयक शिक्षा एवं वैज्ञानिक अनुसंधान मंत्री, माननीया श्रीमती लीला देवी दूकन-लछूमन ने कार्यक्रम के आरंभ में अपने स्वागत्-वक्तव्य में विश्व हिंदी सचिवालय के मुख्यालय के उद्घाटन तथा मॉरीशसीय सरकार की परियोजनाओं के शुभारंभ पर अपनी संतुष्टि व प्रसन्नता व्यक्त की। उन्होंने मॉरीशस के विकास में भारत के सहयोग की सराहना भी की। महामहिम राष्ट्रपति को संबोधित करते हुए उन्होंने हिंदी भाषा के उज्ज्वल भविष्य पर बात की - *''आज आपके हाथों से सचिवालय के इस भवन का द्वार खुलेगा। तब उसके साथ विश्व हिंदी के भविष्य के बहुत सारे द्वार खुलेंगे तथा जब सचिवालय का 'लोगो' मिलेगा, तो विश्व हिंदी समाज को पहली बार एक सामूहिक अस्मिता मिलेगी।''* आगे उन्होंने भवन-निर्माण के विभिन्न पहलुओं को उजागर किया - *''सचिवालय का यह भवन केवल सीमेंट और पत्थर की नींव पर नहीं बना, बल्कि इस इमारत की नींव में दुनिया भर के हिंदी प्रेमियों की आशाएँ हैं। साथ ही इसमें मॉरीशस और भारत के अनगिनत*

ऐसे लोगों की मेहनत है, जिन्होंने अपनी दृष्टि, ज्ञान, कर्त्तव्य और कला से इस संस्था की कल्पना को साकार करने में योगदान दिया।'' उन्होंने भारतीय सरकार तथा समस्त भारतीय संस्थाओं के प्रति आभार व्यक्त किया।

कार्यक्रम का संचालन महात्मा गांधी संस्थान के हिंदी विभागाध्यक्ष, श्री गंगाधरसिंह सुखलाल ने किया। आरंभ में उन्होंने मुख्य अतिथि, विशेष अतिथियों व सभागार में उपस्थित सभी हिंदी प्रेमियों का हार्दिक स्वागत करते हुए विश्व हिंदी सचिवालय के मुख्यालय के उद्घाटन को एक बड़ा कदम बताया।

इस अवसर पर दोनों देशों की मित्रता को महात्मा गांधी संस्थान के कलाकारों द्वारा कथक, भरतनाट्यम् एवं कुचिपुड़ी नृत्य शैलियों के संगम से 'मिलाप-हमारी भावपूर्ण भेंट' नृत्य के रूप में प्रदर्शित किया गया। इसके बाद दोनों देशों के ऐतिहासिक सहयोग के उदाहरण दर्शाते, विश्व हिंदी सचिवालय के भवन-निर्माण, मॉरीशस में प्रारम्भिक डिजिटल अध्ययन योजना, छात्र सहायता योजना एवं सामाजिक आवास परियोजना पर अलग-अलग वीडियो प्रस्तुतियाँ हुईं।

कार्यक्रम में भारत के महामहिम राष्ट्रपति तथा मॉरीशस के माननीय प्रधान मंत्री द्वारा विश्व हिंदी सचिवालय के 'लोगो' तथा प्रारम्भिक डिजिटल अध्ययन योजना व छात्र सहायता योजना का लोकार्पण और दो सामाजिक आवास परियोजनाओं के शुभारंभ हेतु स्मारक पट्ट का अनावरण किया गया।

महामहिम श्री राम नाथ कोविन्द द्वारा माननीय श्री प्रवीण कुमार जगन्नाथ की उपस्थिति में विश्व हिंदी सचिवालय मुख्यालय के स्मारक पट्ट का अनावरण किया गया। इसके पश्चात् महामहिम भारतीय राष्ट्रपति के कर-कमलों द्वारा सचिवालय के नए भवन का उद्घाटन फ़ीता काटकर किया गया।

श्री गंगाधरसिंह सुखलाल द्वारा धन्यवाद-ज्ञापन के साथ ही कार्यक्रम संपन्न हुआ।

विश्व हिंदी सचिवालय की रिपोर्ट

विश्व हिंदी दिवस 2018 : मॉरीशस

विश्व हिंदी सचिवालय द्वारा आयोजित विश्व हिंदी दिवस 2018

10 जनवरी, 2018 को विश्व हिंदी सचिवालय ने शिक्षा व मानव संसाधन, तृतीयक शिक्षा एवं वैज्ञानिक अनुसंधान मंत्रालय तथा भारतीय उच्चायोग, मॉरीशस के तत्वावधान में इंदिरा गांधी भारतीय सांस्कृतिक केंद्र, फ़ेनिक्स में विश्व हिंदी दिवस समारोह का भव्य आयोजन किया।

समारोह की मुख्य अतिथि शिक्षा मंत्री, माननीया श्रीमती लीला देवी दूकन-लछूमन रहीं। कला व संस्कृति मंत्री, माननीय श्री पृथ्वीराजसिंह रूपन, भारतीय उच्चायुक्त, महामहिम श्री अभय ठाकुर तथा इंदिरा गांधी भारतीय सांस्कृतिक केंद्र की निदेशिका, आचार्य प्रतिष्ठा ने भी अपनी उपस्थिति से कार्यक्रम की शोभा बढ़ाई।

सचिवालय ने इस वर्ष विश्व हिंदी दिवस के अवसर पर ताशकेंत स्टेट इंस्टिट्यूट ऑव ओरियंटल स्टडीज़ में दक्षिण एशियाई भाषा विभाग के अध्यक्ष व इंडोलॉजी सेंटर के निदेशक **डॉ. सिरोजिद्दिन सुल्तानमुरातोविच नुर्मातोव** को मुख्य अतिथि के रूप में आमंत्रित किया। नुर्मातोव ने ***'उज़्बेकिस्तान में हिंदी-शिक्षण : दशा एवं दिशा'*** विषय पर वक्तव्य देते हुए उज़्बेकिस्तान में हिंदी के प्रचार-प्रसार पर हो रहे कार्यक्रमों व प्रयासों पर बात की।

माननीया श्रीमती लीला देवी दूकन-लछूमन ने सभी को विश्व हिंदी दिवस की शुभकामनाएँ देते हुए विश्व हिंदी सचिवालय की गतिविधियों की सराहना की। उन्होंने सचिवालय के नए भवन के उद्घाटन को हिंदी का एक अगला पड़ाव बताया। उन्होंने इस वर्ष होनेवाले 11वें विश्व हिंदी सम्मेलन की विशेषताओं तथा चुनौतियों का उल्लेख किया और विश्व हिंदी पत्रिका को लेकर अपने विचार व्यक्त किए तथा मॉरीशस में विश्व हिंदी दिवस मनाने के सार्थक प्रयास पर संतुष्टि व खुशी व्यक्त की। उन्होंने हिंदी को लेकर हो रहे प्रयासों का उल्लेख करते हुए उसमें नए सुधार लाए जाने की इच्छा जताई और कहा कि ***''हमें अपने शैक्षिक सुधार, पाठ्य-पुस्तक, डिजिटल लर्निंग प्रोग्राम तथा प्रकाशन आदि का उदाहरण देकर साबित करना है कि मॉरीशस पूरी दुनिया में हिंदी-शिक्षण व प्रचार-प्रसार हेतु एक मिसाल है।'' उन्होंने 11वें विश्व हिंदी सम्मेलन में सभी के सहयोग का आह्वान किया।***

महामहिम श्री अभय ठाकुर ने इस अवसर पर भारत गणराज्य के प्रधान मंत्री, महामहिम श्री नरेंद्र मोदी का संदेश पढ़कर सुनाया। उन्होंने अपने वक्तव्य में कहा कि हिंदी को लेकर यहाँ जो भी कार्य किए जा रहे हैं, उनसे भारत एवं मॉरीशस का भाषाई संबंध सुदृढ़ हो रहा है।

कला एवं संस्कृति मंत्री, माननीय श्री पृथ्वीराजसिंह रूपन ने मॉरीशस में हिंदी के विकास पर बात करते हुए भविष्य में सचिवालय के कार्यों का उल्लेख किया तथा उन कार्यों के लिए अपने मंत्रालय के समर्थन का आश्वासन दिया। उन्होंने भाषा को सभी की पहचान बताते हुए भाषा को पढ़ने एवं बोलने की प्रार्थना की।

समारोह के आरम्भ में सचिवालय के महासचिव, प्रो. विनोद कुमार मिश्र ने उपस्थित महानुभावों व सभी अतिथियों का स्वागत किया और सभी को विश्व हिंदी दिवस की शुभकामनाएँ देते हुए सचिवालय द्वारा आयोजित अंतरराष्ट्रीय हिंदी एकांकी प्रतियोगिता के परिणामों की घोषणा की।

इंदिरा गांधी भारतीय सांस्कृतिक केंद्र की निदेशिका, आचार्य प्रतिष्ठा ने विश्व हिंदी दिवस की शुभकामनाएँ देते हुए रंगमंच पर प्रकाश डाला। उन्होंने यह विचार व्यक्त किया कि रंगमंच के माध्यम से हिंदी का संवर्धन एवं संरक्षण हुआ है।

विश्व हिंदी पत्रिका के 9वें अंक का लोकार्पण

इस वर्ष सचिवालय ने अपने वार्षिक प्रकाशन 'विश्व हिंदी पत्रिका' के 9वें अंक के मुद्रित व वेब प्रारूपों का लोकार्पण किया। इस अंक में विभिन्न देशों से प्राप्त 42 आलेख पाठकों के समक्ष प्रस्तुत किए गए। यह अंक सचिवालय के वेबसाइट www.vishwahindi.com पर भी उपलब्ध है।

अंतरराष्ट्रीय हिंदी एकांकी प्रतियोगिता

विश्व हिंदी दिवस 2018 के उपलक्ष्य में सचिवालय ने वर्ष 2017 में 'अंतरराष्ट्रीय हिंदी एकांकी प्रतियोगिता' का आयोजन किया था। समारोह में प्रतियोगिता के परिणामों की घोषणा की गई। मॉरीशस के तीन विजेताओं (प्रथम - श्री विश्वानंद पतिया; द्वितीय - श्री सोमदत्त काशीनाथ; तृतीय - डॉ. अलका धनपत) को पुरस्कार राशि तथा प्रमाण-पत्र भेंट किए गए।

सांस्कृतिक कार्यक्रम

कार्यक्रम का आरम्भ इंदिरा गांधी भारतीय सांस्कृतिक केंद्र के कलाकारों द्वारा 'नर्तन से कीर्तन' विषयक नृत्य प्रस्तुति से हुआ। इस वर्ष कला व संस्कृति मंत्रालय तथा भारतीय सांस्कृतिक संबंध परिषद् (आई.सी.सी.आर.) के सहयोग से भारत से आए 'क्षितिज थिएटर ग्रुप' ने 'कर्मभूमि' नाटक का मंचन किया।

अनेक मंत्री गण, मंत्रालयों के अधिकारी गण, शैक्षिक व धार्मिक संस्थाओं के प्रतिनिधि व सदस्य गण, मॉरीशसीय हिंदी साहित्यकारों, लेखकों, प्राध्यापकों, शिक्षकों व छात्रों ने अपनी उपस्थिति से कार्यक्रम की शोभा बढ़ाई। मंच-संचालन डॉ. माधुरी रामधारी ने किया।

अन्य गतिविधियाँ

11 जनवरी, 2018 को डॉ. सिरोजिद्दिन सुल्तानमुरातोविच नुर्मातोव ने शिक्षा व मानव संसाधन, तृतीयक शिक्षा एवं वैज्ञानिक अनुसंधान मंत्री, माननीया श्रीमती लीला देवी दुकन-लछुमन, कला एवं संस्कृति मंत्री माननीय श्री पृथ्वीराजसिंह रूपन एवं भारतीय उच्चायुक्त, महामहिम श्री अभय ठाकुर से औपचारिक भेंट की।

12 जनवरी, 2018 को रवींद्रनाथ टैगोर संस्थान में 'क्षितिज थिएटर ग्रुप' की नाट्य-प्रस्तुति का आयोजन किया गया, जिसमें मॉरीशस के हिंदी प्रेमियों ने उत्साह के साथ भाग लिया।

इसके अतिरिक्त, महात्मा गांधी संस्थान के सुब्रमण्यम् भारती सभागार में शिक्षकों तथा छात्रों सहित हिंदी प्रेमियों के लिए एक शैक्षणिक सत्र का आयोजन किया गया जिसमें डॉ. नुर्मातोव ने ताशकेंत, उज़्बेकिस्तान में हिंदी के पठन-पाठन तथा वहाँ हिंदी में हो रहे शोध पर बात की। डॉ. नुर्मातोव ने मॉरीशस ब्रॉडकास्टिंग कॉर्पोरेशन द्वारा संचालित 'सृजन' टी.वी. कार्यक्रम में भी भाग लिया।

विश्व हिंदी सचिवालय की रिपोर्ट

विश्व हिंदी दिवस 2018 : भारत

वर्धा

10 जनवरी, 2018 को महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय, वर्धा में विश्व हिंदी दिवस का आयोजन किया गया। कार्यक्रम की अध्यक्षता करते हुए प्रो. गिरीश्वर मिश्र ने कहा कि अध्ययन और अध्यापन पद्धति को विकसित करने के लिए अन्य भाषाओं के शब्दों को हिंदी में लाने की आवश्यकता है। इस अवसर पर प्रो. वृषभ प्रसाद जैन ने कहा कि हिंदी के माध्यम से विदेशी विद्यार्थी हमसे जुड़ना चाहते हैं, भारत और विश्व को समृद्ध बनाने में हिंदी महत्त्वपूर्ण योगदान दे सकती है। प्रो. के. के. सिंह ने हिंदी की वर्तमान स्थिति और चुनौतियों पर वक्तव्य देते हुए कहा कि हिंदी को अपनी भूमि पर समृद्ध करना चाहिए। प्रो. प्रीति सागर ने कहा कि हिंदी को व्यापक बनाने के लिए सरलता और सुगमता की आवश्यकता है। डॉ. मुन्नालाल गुप्त ने हिंदी भाषा के वैश्विक स्वरूप और प्रवासी भारतीयों के योगदान तथा 'सरनामी' पत्रिका का उल्लेख किया। इस अवसर पर थाईलैंड की एक विदेशी छात्रा ने कविता-पाठ किया। समारोह में विश्वविद्यालय के अध्यापक तथा विद्यार्थी उपस्थित थे। कार्यक्रम का संचालन संयोजक, प्रो. वृषभ प्रसाद जैन ने किया तथा डायस्पोरा विभाग के सहायक प्रोफ़ेसर डॉ. मुन्नालाल गुप्ता ने आभार व्यक्त किया। साहित्य विद्यापीठ की संकायाध्यक्ष, प्रो. प्रीति सागर, साहित्य विद्यापीठ के अध्यक्ष प्रो. के. के. सिंह, भाषावैज्ञानिक तथा भाषा विद्यापीठ के प्रो. वृषभ प्रसाद जैन, कार्यक्रम के संयोजक एवं डायस्पोरा विभाग के अध्यक्ष डॉ. राजीव रंजन राय मंचासीन वक्ता थे।

साभार : महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय, वर्धा

बहराइच

10 जनवरी, 2018 को बहराइच के स्व. ठाकुर हुकुम सिंह किसान पी. जी कॉलिज के प्रेक्षागृह में विश्व हिंदी दिवस के अवसर पर एक कार्यक्रम का आयोजन किया गया। वरिष्ठ साहित्यकार श्री राधेश्याम पाण्डेय मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थित थे। इस अवसर पर ज़िलाधिकारी, श्री अजय दीप सिंह ने कहा कि हिंदी भाषा को आगे बढ़ाने के लिए हम सभी को संकल्प लेना होगा। आज हिंदी अंतरराष्ट्रीय स्तर पर भी अपनी पहचान बना रही है। हिंदी भाषा के प्रति लोगों को जागरूक करने के लिए विश्व हिंदी दिवस को व्यापक स्तर पर मनाए जाने की आवश्यकता है। उप ज़िलाधिकारी, श्री एस. पी. शुक्ल, अध्यक्ष ज़िला को-ऑपरेटीव बैंक से श्री जीतेन्द्र प्रताप सिंह 'जीतू', डॉ. शिवम श्रीवास्तव, डॉ. सत्यभूषण सिंह, हेमन्त मिश्र, अतुल अवस्थी सहित अन्य वक्ताओं ने कहा कि हिंदी का प्रयोग व्यावहारिक रूप से किया जाए, तभी हिंदी का विकास संभव होगा। इस अवसर पर कई गण्यमान्य अतिथि उपस्थित थे। कार्यक्रम का संचालन श्री चन्द्र मोहन उपाध्याय तथा धन्यवाद-ज्ञापन प्राचार्य एस. पी. मिश्र ने किया।

साभार : इंडिया फ़ैक्ट न्यूज़.कॉम

चेन्नई

10 जनवरी, 2018 को डीजी वैष्णव कॉलिज ने चेन्नई नगर राजभाषा समिति इंडियन बैंक एवं पंजाब नेशनल बैंक के संयुक्त तत्वावधान में विश्व हिंदी दिवस के उपलक्ष्य में 'डिजिटल बैंकिंग' पर एक संगोष्ठी का आयोजन किया। कार्यक्रम का उद्घाटन दीप प्रज्ज्वलन से हुआ। कॉलिज के प्राचार्य, डॉ. टी. संथानम् ने अध्यक्षीय वक्तव्य दिया। इस अवसर पर मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थित इंडियन बैंक के कार्यपालक निदेशक एम. के. भट्टाचार्य ने कहा कि आनेवाला समय डिजिटल का है, इसलिए स्वयं को डिजिटल बनाना आवश्यक है। कॉलिज के सचिव, श्री अशोक कुमार मूंदड़ा ने कहा कि हिंदी मात्र एक भाषा नहीं बल्कि एक संस्कृति व संस्कार है, इसे बढ़ावा दिया जाना चाहिए। पंजाब नेशनल बैंक के उप महाप्रबंधक, पी. चंद्रकुमार ने कहा कि भाषा तो सदैव हमारे मन में होनी चाहिए। इंडियन बैंक के महाप्रबंधक, टी. एस. शेषाद्री ने कहा कि ऐसी संगोष्ठी से जानकारी व जागरूकता बढ़ती है। इस अवसर पर एक प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। कार्यक्रम का संचालन निपुण जैन ने किया।

साभार : दक्षिण भारत.कॉम

गोड्डा, झारखण्ड

10 जनवरी, 2018 को गोड्डा, झारखण्ड के विद्यापति साहित्य भवन में विश्व हिंदी दिवस के अवसर पर हिंदी साहित्य पर एक परिचर्चा-सत्र का आयोजन किया गया। समारोह का उद्घाटन पोड़ैयाहाट अंचल अधिकारी बिजय कुमार,

विद्यापति साहित्य परिषद् के सचिव, श्री रविशंकर झा, सर्व शिक्षा के ए. डी. पी. ओ. द्वारा दीप प्रज्ज्वलन से हुआ। इस अवसर पर अधिवक्ता श्री सर्वजीत झा ने कहा कि हिंदी भाषा दुनिया की ऐसी भाषा है, जो मानव शरीर के हर अंग से जुड़ी है। दुनिया की अधिकांश भाषाएँ 26 अक्षरों से बनी है, लेकिन हिंदी भाषा 52 अक्षरों से बनी है। इसलिए हिंदी अपने आप में महान है। समारोह में जनवादी लेखक, श्री अमरावत के साहित्य पर भी परिचर्चा हुई।

साभार : न्यूज़कोड.कॉम

जयपुर

10 जनवरी, 2018 को राजस्थान हिंदी ग्रन्थ अकादमी द्वारा विश्व हिंदी दिवस के उपलक्ष्य में ***'विश्व पटल पर हिंदी : चुनौतियाँ और सम्भावनाएँ'*** विषय पर एक संगोष्ठी का आयोजन किया गया। कार्यक्रम की अध्यक्षता श्री विमलप्रसाद अग्रवाल ने की। अकादमी की निदेशिका डॉ. अनीता नायर ने कहा कि हिंदी के वैश्विक स्तर पर विकास में हमें कई चुनौतियों का सामना करना पड़ रहा है, फिर भी हिंदी भाषा सभी चुनौतियों का सामना करते हुए विकास की राह पर अग्रसर है। मुख्य वक्ता डॉ. शिवशरण कौशिक ने कहा कि भाषा में लिपि का महत्त्व है। लिपि के खत्म होने से भाषाएँ भी मर रही हैं। डॉ. अल्पना कटेजा ने अपने वक्तव्य में कहा कि हिंदी भारत की अस्मिता है। इसका अनुभव विदेशों में जाने पर होता है। अनेक विदेशी विद्वानों ने भी हिंदी को विश्व स्तर पर पहुँचाने में सहयोग दिया है।

साभार : राजस्थान हिंदी ग्रन्थ अकादमी, जयपुर

पटना

10 जनवरी 2018 को बिहार साहित्य सम्मेलन में विश्व हिंदी दिवस के अवसर पर एक समारोह का आयोजन किया गया। मगध विश्वविद्यालय के पूर्व कुलपति, मेजर बलबीर सिंह 'भसीन' ने समारोह का उद्घाटन किया। कार्यक्रम की अध्यक्षता डॉ. अनिल सुलभ ने की। सम्मेलन के साहित्य मंत्री, डॉ. शिववंश पांडेय ने कहा कि हिंदी के विकास में सबसे बड़ी बाधा भारत में इसका राज-काज की भाषा नहीं बन पाना ही है। जिस दिन यह बाधा दूर कर दी जाएगी, हिंदी को नए पंख लग जाएँगे। इस अवसर पर हैदराबाद से आए भारत के पूर्व उप राष्ट्रपति बी. डी. जत्ती द्वारा स्थापित संस्था 'वासव समिति, हैदराबाद' के अध्यक्ष, श्री जनार्दन पाटिल को 'साहित्य सम्मेलन हिंदी सेवी सम्मान' से सम्मानित किया गया। प्रो. वासुकीनाथ झा, डॉ. नागेश्वर प्रसाद यादव, श्री कुमार अनुपम तथा श्री चंद्रदीप प्रसाद ने भी अपने विचार व्यक्त किए। इस अवसर पर एक कवि-सम्मेलन का आयोजन किया गया, जिसमें कवियों ने कविता-पाठ व ग़ज़ल-गान किया। कार्यक्रम का संचालन श्री योगेन्द्र प्रसाद मिश्र तथा धन्यवाद-ज्ञापन श्री कृष्ण रंजन सिंह ने किया।

साभार : बिहार खोज खबर.कॉम

विश्व हिंदी दिवस 2018 : विश्व भर में

होंग कोंग, चीन

14 जनवरी, 2018 को होंग कोंग में स्थित भारतीय कौंसुलावास ने अपने सभागार में विश्व हिंदी दिवस मनाया। प्रधान कौंसुल, माननीय श्री पुनीत अग्रवाल ने विश्व हिंदी दिवस के महत्त्व के बारे में बात की। इस अवसर पर संस्कृति फ़ाउण्डेशन के बच्चों ने पूजा और लोक-नृत्य तथा हिंदी पाठशाला के बच्चों ने 'अंधेर नगरी चौपट राजा' नाटक प्रस्तुत किया। इसके साथ-साथ हिंदी प्रश्नोत्तरी, कविता-पाठ तथा 'रिडर्स थिएटर' ने मुंशी प्रेमचंद की कहानी का पाठ-रूपांतरण किया, जिसमें बच्चों और उनके माता-पिता ने भाग लिया।

साभार : भारतीय कौंसुलावास, होंग कोंग का वेबसाइट

काठमांडू, नेपाल

10 जनवरी, 2018 को भारतीय राजदूतावास, काठमांडू, नेपाल द्वारा त्रिभुवन विश्वविद्यालय, काठमांडू के हिंदी विभाग के तत्वावधान में होटल अन्नपूर्णा में विश्व हिंदी दिवस का आयोजन किया गया। नेपाल सरकार के संस्कृति, पर्यटन तथा नागरिक उड्डयन मंत्री, माननीय श्री जितेन्द्रनारायण देव मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थित थे। नेपाल के राजदूत, महामहिम श्री मंजीव सिंह पुरी ने इस

अवसर पर प्रधान मंत्री माननीय श्री नरेंद्र मोदी का संदेश पढ़ा। माननीय मंत्री, श्री जितेन्द्रनारायण देव ने भारत और नेपाल के सांस्कृतिक संबंधों को मज़बूत करने में हिंदी की भूमिका पर ज़ोर दिया। राजदूत, महामहिम श्री मंजीव सिंह पुरी ने भारतीय संस्कृति के संरक्षण में हिंदी की भूमिका और विभिन्न क्षेत्रों तथा समाजों को जोड़ने में इसके महत्त्व को रेखांकित किया। इस अवसर पर भारतीय सांस्कृतिक केंद्र, काठमांडू के कलाकारों द्वारा एक सांस्कृतिक कार्यक्रम का आयोजन किया गया। समारोह में 3 कविता-संग्रहों और हिंदी पत्रिकाओं का लोकार्पण हुआ। इस अवसर पर एक कवि-सम्मेलन का आयोजन भी हुआ, जिसमें अनेक कवियों ने भाग लिया। कार्यक्रम में हिंदी के साहित्यकार, राजदूतावास के अधिकारी व अन्य गण्यमान्य अतिथि उपस्थित थे।

साभार : भारतीय राजदूतावास, काठमांडू, नेपाल का वेबसाइट

लंदन

10 जनवरी, 2018 को भारतीय उच्चायोग, लंदन द्वारा इंडिया हाउस के गांधी हॉल में विश्व हिंदी दिवस का आयोजन किया गया। भारतीय उच्चायुक्त, महामहिम श्री यशवर्धन कुमार सिन्हा ने प्रधान मंत्री का संदेश पढ़ा और ब्रिटेन में रह रहे भारतवंशियों और आप्रवासी भारतीयों को विश्व हिंदी दिवस की बधाई दी। सभा को संबोधित करते हुए मंत्री श्री ए. एस. राजन ने कहा कि विश्व हिंदी दिवस का आयोजन राजभाषा हिंदी की भूमंडलीय उड़ान है। आज हिंदी दुनिया भर में बोली जानेवाली भाषाओं में प्रमुख भाषा बन गई है। उन्होंने विश्व भर में हिंदी के प्रचार-प्रसार में हिंदी सिनेमा के महत्त्व को रेखांकित किया। साउथ एशिया फ़िल्म फ़ाउंडेशन के संस्थापक, श्री ललित मोहन जोशी ने हिंदी सिनेमा और हिंदी कविता पर प्रस्तुति दी। इस अवसर पर पुराने हिंदी फ़िल्मी गीतों पर एक कार्यक्रम का आयोजन किया गया। इस अवसर पर भारतीय उच्चायोग के अधिकारीगण, ब्रिटेन के हिंदी साहित्यकार और हिंदी प्रेमी उपस्थित थे। कार्यक्रम का संचालन उच्चायोग के हिंदी अधिकारी, श्री तरुण कुमार ने किया।

साभार : भारतीय उच्चायोग, लंदन का वेबसाइट

मापुटो, मोज़ाम्बिक

20 जनवरी, 2018 को भारतीय उच्चायोग, मापुटो एवं भारत समाज, मापुटो के पारस्परिक सहयोग से विश्व हिंदी दिवस समारोह भव्य रूप से मनाया गया। मापुटो के भारतीय उच्चायुक्त, महामहिम श्री रुद्र गौरव ने 200 से अधिक संख्या में उपस्थित भारतीय मूल के लोगों को विश्व हिंदी दिवस के उपलक्ष्य में भारत के प्रधान मंत्री श्री नरेंद्र मोदी का संदेश पढ़कर सुनाया। इस अवसर पर उपस्थित भारत के गण्यमान्य अतिथि एवं विश्व स्वयंसेवक संघ के अंतरराष्ट्रीय समन्वयक, माननीय डॉ. सदानंद सप्रे ने हिंदी को अपनी माँ की तरह निस्संकोच सतत् अपनाने की प्रेरणा दी। इस अवसर पर निबंध एवं कविता-लेखन प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। 18 प्रतिभागियों को भारतीय उच्चायुक्त द्वारा पुरस्कृत किया गया।

साभार : भारतीय उच्चायोग, मापुटो, मोज़ाम्बिक का वेबसाइट

मास्को, रूस

25 जनवरी, 2018 को जवाहरलाल नेहरू सांस्कृतिक केंद्र तथा भारतीय राजदूतावास मास्को के संयुक्त तत्वावधान में दुर्गाप्रसाद धर सभागार में विश्व हिंदी दिवस समारोह का आयोजन किया गया। समारोह का शुभारंभ मुख्य अतिथि राजदूत महामहिम श्री पंकज सरन तथा विशिष्ट अतिथियों द्वारा दीप प्रज्ज्वलन से हुआ। श्री पंकज सरन ने प्रधान मंत्री माननीय श्री नरेंद्र मोदी का संदेश पढ़ा तथा अपने वक्तव्य में कहा कि हिंदी विश्व भर में बोली और समझी जानेवाली विश्व भाषाओं में अपनी पहचान स्थापित कर चुकी है, यानी कि अंतरराष्ट्रीय स्तर पर हिंदी की माँग में वृद्धि हुई है। साथ ही उन्होंने रूस-भारत मित्रता तथा रूस में हिंदी प्रचार-प्रसार के लिए किए जानेवाले प्रयासों की भी जानकारी दी। केंद्र से डॉ. मीनू शर्मा की पुस्तक 'से. रा. यात्री के उपन्यासों में जीवन मूल्य' तथा रूस भारत मैत्री संघ की पत्रिका 'नई दिशा' का विमोचन भी किया गया। जवाहरलाल नेहरू सांस्कृतिक केंद्र के विद्यार्थियों-क्सेनीया, तमारा और निकिता आदि द्वारा भारत-रूस मैत्री पर आधारित हिंदी नाटक 'वतन से चिट्ठी आई है' का मंचन भी किया गया तथा केंद्र के अन्य विद्यार्थियों

ने भी कविता-पाठ किया। कार्यक्रम का संचालन और निर्देशन केंद्र की हिंदी अध्यापिका, डॉ. मीनू शर्मा ने किया। इस अवसर पर भाषाविद् श्री अलेक्ज़ेंदर स्तोल्यारोव, 'दिशा' के संस्थापक डॉ. रामेश्वर सिंह, 'हिंदुस्तानी समाज' के अध्यक्ष, श्री कश्मीर सिंह तथा पंजाबी सभा मास्को से श्री प्रमोद उपस्थित थे।

डॉ. मीनू शर्मा की रिपोर्ट

नायरोबी

9 जनवरी, 2018 को भारतीय उच्चायोग, नायरोबी तथा पूर्वी-अफ़्रीकी हिंदी-समिति के संयुक्त तत्वावधान में विश्व हिंदी दिवस मनाया गया। इस अवसर पर भारतीय उच्चायुक्त, महामहिम सुश्री सुचित्रा दुरई ने माननीय प्रधान मंत्री श्री नरेंद्र मोदी का संदेश पढ़ा। हिंदी-समिति के अध्यक्ष, श्री अरविंदरजीत सिंह मेहता ने केनिया में हिंदी के प्रचार-प्रसार के लिए हिंदी-समिति द्वारा की जा रही गतिविधियों से अवगत करवाया। इस अवसर पर कई कवियों ने कविताएँ पढ़ीं। थिका से युवा मीत भट्ट ने 'मिश्रित बॉलिवुड संगीत प्रदर्शन' प्रस्तुत किया तथा केनिया बंगाली सांस्कृतिक और कल्याण सोसाइटी ने 'नृत्य-संगम' प्रस्तुत किया। कार्यक्रम के अंत में भारतीय सांस्कृतिक संबंध परिषद् द्वारा भेजी गई पुस्तकें हिंदी-समिति एवं उपस्थित बच्चों को भेंट की गईं।

साभार : विदेश मंत्रालय का वेबसाइट

न्यू यॉर्क

13 जनवरी, 2018 को भारतीय कौंसलावास, न्यू यॉर्क में विश्व हिंदी दिवस का आयोजन किया गया। इस अवसर पर दो भाषाविद् प्रो. जेनिस जेनसन और प्रो. जेनिफ़र एड्डी उपस्थित थे। प्रो. जेनिस जेनसन ने अपने संदेश में कहा कि 21वीं सदी में भाषा-शिक्षण की गुणवत्ता बढ़ाने के किए ज़रूरी है कि शिक्षकों के प्रशिक्षण की आधुनिक व्यवस्था की जाए। प्रो. जेनिफ़र एड्डी ने 'मास्टर इन आर्ट्स' कार्यक्रम से जुड़े हिंदी सर्टिफ़िकेशन के अहम् पहलुओं की चर्चा करते हुए कहा कि न्यू यॉर्क के भारतीय समुदाय की नई पीढ़ी को हिंदी शिक्षक के रूप में प्रशिक्षित करने का यह सुनहरा अवसर उपलब्ध हुआ है। प्रधान कौंसुल, महामहिम श्री चक्रवर्ती ने कहा कि हिंदी भारतीय मूल के लोगों की पहचान है, जिसे समृद्ध किए बिना भारतीय संस्कृति का प्रसार नहीं किया जा सकता। इस अवसर पर बच्चों द्वारा कविता-पाठ और नृत्य-नाटिकाएँ प्रस्तुत की गईं।

साभार : भारत का प्रधान कौंसलावास, न्यू यॉर्क

सेशेल्स

10 फ़रवरी, 2018 को भारतीय उच्चायोग, विक्टोरिया, सेशेल्स में विश्व हिंदी दिवस भव्य रूप से मनाया गया। सेशेल्स के भारतीय उच्चायुक्त, महामहिम डॉ. औसफ़ सईद ने अपने वक्तव्य में विश्व भर में हिंदी के प्रचार पर बात की। उन्होंने यह भी कहा कि विश्व की सबसे अधिक बोली जानेवाली भाषाओं में से एक होने के मद्देनज़र संयुक्त राष्ट्र संघ में हिंदी को मान्यता दिए जाने की आवश्यकता है। इस अवसर पर निबंध तथा कविता-पाठ जैसी प्रतियोगिताओं में सफल रहे प्रतिभागियों को महामहिम डॉ. औसफ़ सईद और श्रीमती फ़रहा सईद ने पुरस्कृत किया।

साभार : भारतीय उच्चायोग, सेशेल्स का वेबसाइट

शंघाई

10 जनवरी, 2018 को भारतीय महावाणिज्य दूतावास, शंघाई ने विश्व हिंदी दिवस के उपलक्ष्य में एक कार्यक्रम का आयोजन किया। इस अवसर पर प्रधान मंत्री का संदेश पढ़ा गया। महामहिम महावाणिज्य दूत ने अतिथियों का स्वागत करते हुए कहा कि प्रत्येक व्यक्ति यह सुनिश्चित करे कि दैनिक जीवन में हिंदी भाषा का अधिकाधिक प्रयोग हो, विशेषत: उन परिस्थितियों में, जहाँ भारतीय बच्चे विदेशों में पल एवं बढ़ रहे हैं, जहाँ हिंदी सामान्य जीवन का हिस्सा नहीं है। इस अवसर पर भारतीय शिक्षार्थियों द्वारा नाटक, गायन एवं कविता-पाठ का आयोजन किया गया और वयस्कों ने स्वरचित कविताओं का पाठ किया। समारोह में भारतीय विद्यार्थियों एवं अन्य गण्यमान्य अतिथि उपस्थित थे।

साभार : भारतीय महावाणिज्य दूतावास, शंघाई

सीरिया

10 जनवरी, 2018 को सीरिया के सी.एस.आई.आर सभागार में विश्व हिंदी दिवस का आयोजन किया गया। समारोह की अध्यक्षता संस्थान के मुख्य वैज्ञानिक, प्रो. राज सिंह ने की। प्रो. राज सिंह ने सहकर्मियों व विद्यार्थियों को संबोधित करते हुए विश्व में हिंदी के बढ़ते प्रभुत्व की चर्चा की। उन्होंने कहा कि हिंदी को वैश्विक भाषा का दर्जा दिलाने के प्रयासों में तेज़ी आई है और देश-विदेश के हिंदी प्रेमी भी अपने-अपने स्तर पर कार्य कर रहे हैं। उन्होंने हिंदी के प्रचार-प्रसार में राष्ट्रपिता महात्मा गांधी के योगदान की भी चर्चा की। कार्यक्रम

के उपरांत विश्व हिंदी दिवस के अवसर पर सहकर्मियों के लिए हिंदी श्रुतलेख प्रतियोगिता का भी आयोजन किया गया, जिसमें प्रतिभागियों ने उत्साहपूर्वक भाग लिया। कार्यक्रम का संचालन हिंदी अधिकारी श्री रमेश बौरा ने किया तथा धन्यवाद-ज्ञापन श्री के. पी. शर्मा ने किया। अवसर पर अन्य सहकर्मी व विद्यार्थी उपस्थित थे।

साभार : केंद्रीय इलेक्ट्रॉनिक अभियांत्रिकी अनुसंधान संस्थान का वेबसाइट

बैंकॉक , थाईलैंड

30 जनवरी, 2018 को भारत के दूतावास, बैंकॉक द्वारा सामाजिक विज्ञान संकाय, श्रीनाखरीनविरोट विश्वविद्यालय, थम्मासात विश्वविद्यालय, भारतीय सांस्कृतिक केंद्र, थाई-भारत सांस्कृतिक लॉज और थाईलैंड हिंदी परिषद्, एन.आई.एस.टी. इंटरनेशनल स्कूल, ग्लोबल इंडियन इंटरनेशनल स्कूल के संयुक्त तत्वावधान में ग्रैंड ऑडिटोरियम, द्वितीय तल अनुसंधान और सतत् शिक्षा भवन, श्रीनाखरीनविरोट विश्वविद्यालय, बैंकॉक में विश्व हिंदी दिवस मनाया गया। कार्यक्रम की अध्यक्षता भारतीय दूतावास, बैंकॉक के उपराजदूत श्री अब्बागनी रामू ने की। श्रीनाखरीनविरोट विश्वविद्यालय के अध्यक्ष प्रो. डॉ. सोमचई संतिंताकुल मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थित थे। श्री अब्बागनी रामू ने भारतीय प्रधान मंत्री का संदेश पढ़ा। प्रो. डॉ. सोमचई संतिंताकुल ने कहा कि भारतीय दूतावास और भारतीय समुदाय के माध्यम से श्रीनाखरीनविरोट विश्वविद्यालय और भारत के बीच और करीबी संबंध बन रहे हैं। इस अवसर पर भारतीय छात्रों ने सांस्कृतिक कार्यक्रम प्रस्तुत किया तथा कविता-पाठ, नाटक, स्क्रिप्ट, वार्तालाप, हिंदी गीत और नृत्य प्रस्तुत किए। समारोह में अनेक गण्यमान्य अतिथि उपस्थित थे।

साभार : भारतीय दूतावास, बैंकॉक

कैंडी, श्रीलंका

10 जनवरी, 2018 को सहायक उच्चायोग, कैंडी द्वारा भारतीय कला केंद्र, कैंडी में विश्व हिंदी दिवस का आयोजन किया गया। सबरागमुवा विश्वविद्यालय, बेलिहुलोया के भाषा विभाग से डॉ. प्रियंका वीरसेकरा मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थित थीं, जिन्होंने हिंदी भाषा को बढ़ावा देने के लिए सबरागमुवा विश्वविद्यालय के प्रयासों का आश्वासन दिया। इस अवसर पर भारत के सहायक उच्चायुक्त, महामहिम श्री धीरेंद्र सिंह ने भारत के माननीय प्रधान मंत्री श्री नरेंद्र मोदी का संदेश पढ़ा। विश्व हिंदी दिवस के उपलक्ष्य में आयोजित की गई कविता-पठन, व्यक्तित्व प्रश्नावली, एंकरिंग और कहानी जैसी कई प्रतियोगिताओं के विजेताओं को पुरस्कृत किया गया।

साभार : सहायक उच्चायोग, कैंडी

विश्व हिंदी सचिवालय, मॉरीशस के आधिकारिक कार्यारंभ दिवस की 10वीं वर्षगाँठ
तथा
विचार-मंच : *'काव्य-शिक्षण में गीतों का प्रयोग'*

7 फ़रवरी, 2018 को विश्व हिंदी सचिवालय ने मॉरीशस के शिक्षा व मानव संसाधन, तृतीयक शिक्षा एवं वैज्ञानिक अनुसंधान मंत्रालय तथा भारतीय उच्चायोग, मॉरीशस के तत्वावधान में महात्मा गांधी संस्थान के सुब्रमण्यम् भारती सभागार में अपने कार्यारंभ दिवस की 10वीं वर्षगाँठ मनाई। इस उपलक्ष्य में सचिवालय ने अपने त्रैमासिक कार्यक्रम 'विचार-मंच' का भी आयोजन किया, जो ***'काव्य-शिक्षण में गीतों का प्रयोग'*** विषय पर आधारित था।

प्रथम सत्र में कार्यारंभ दिवस मनाया गया, जिसमें शिक्षा व मानव संसाधन, तृतीयक शिक्षा एवं वैज्ञानिक अनुसंधान मंत्री, माननीया श्रीमती लीला देवी दूकन-लछूमन मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थित थीं। इस वर्ष महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय, वर्धा, भारत के भाषा-केंद्र के निदेशक प्रो. वृषभ प्रसाद जैन को बीज वक्ता के रूप में आमंत्रित किया गया था। भारतीय उच्चायोग की द्वितीय सचिव, डॉ. नूतन पाण्डेय, महात्मा गांधी संस्थान की महानिदेशिका, श्रीमती सूर्यकान्ति गयान तथा निदेशिका, डॉ. विद्योत्मा कुंजल, संस्थान की परिषद् के अध्यक्ष, श्री जयनारायण मीतू व अन्य गण्यमान्य अतिथियों ने कार्यक्रम की शोभा बढ़ाई। कार्यक्रम का शुभारंभ दीप प्रज्ज्वलन से हुआ। मुख्य अतिथि माननीया श्रीमती लीला देवी दुकन-लछुमन ने इस अवसर पर सभागार को संबोधित करते हुए सचिवालय के आधिकारिक कार्यारंभ दिवस की 10वीं वर्षगाँठ की बधाई के साथ उसकी उपलब्धियों की चर्चा की। उन्होंने कहा कि ***''विश्व हिंदी सचिवालय ने हिंदी को वैश्विक पहचान दिलाने में बड़ा योगदान दिया तथा अनेक देशों की हिंदी संस्थाओं के साथ जुड़कर हिंदी के उत्थान का अभियान चलाया।''*** उन्होंने पुन: कहा कि आगामी विश्व हिंदी सम्मेलन की तैयारियाँ शुरू हो चुकी हैं और अब समय आ गया है कि हिंदी को हमारे पूर्वजों की भाषा से आगे बढ़ाकर उद्योग और व्यापार की भाषा बनाया जाए।

भारतीय उच्चायुक्त की द्वितीय सचिव, डॉ. नूतन पाण्डेय ने सचिवालय के कार्यों की प्रशंसा करते हुए कहा कि ***''विश्व हिंदी सचिवालय के प्रयत्नों से विश्व भर***

के हिंदी प्रेमियों में न केवल साहित्य सृजन की ओर झुकाव आया है, बल्कि ज्ञान-विज्ञान की भाषा के रूप में भी हिंदी को आगे आने का अवसर मिला है।''

बीज वक्ता, प्रो. वृषभ प्रसाद जैन ने 'वैश्विक हिंदी, भाषिक संपदा : विस्तार एवं संभावनाएँ' विषय पर अपना वक्तव्य दिया। प्रो. जैन ने हिंदी को प्रेम और जुड़ाव की भाषा बताया और कहा कि हमें इस भाषा को सुरक्षित रखना चाहिए क्योंकि भाषा नहीं तो पहचान नहीं तथा भाषा संसार और समाज को रूप भी देती है। उन्होंने कहा कि *''हिंदी को वैश्विक स्तर पर समृद्ध करना चाहिए तथा हिंदी के विश्व परिवार को मज़बूत करने का संकल्प लेना होगा।''*

कार्यक्रम के आरंभ में सचिवालय के महासचिव, प्रो. विनोद कुमार मिश्र ने उपस्थित महानुभावों, गण्यमान्य अतिथियों, हिंदी प्रेमियों, शिक्षकों व छात्रों का स्वागत किया।

सत्र का संचालन सचिवालय की उपमहासचिव, डॉ. माधुरी रामधारी ने किया।

विचार-मंच : 'काव्य-शिक्षण में गीतों का प्रयोग'

द्वितीय सत्र में *'काव्य-शिक्षण में गीतों का प्रयोग'* विषय पर विचार-मंच का आयोजन किया गया। प्रो. विनोद कुमार मिश्र ने अपने स्वागत भाषण में कहा कि *''विचार-मंच वह मंच है, जो इस पूरे गणराज्य में केंद्र से परिधि की यात्रा कराता है।''*

डॉ. नूतन पाण्डेय ने अपने वक्तव्य में सचिवालय को बधाई देते हुए कहा कि विचार-मंच यहाँ के शिक्षकों, अध्यापकों और छात्रों के लिए बहुत ही लाभदायक है। उन्होंने कहा कि *''मैं उम्मीद करती हूँ ऐसे ही विचार-मंच आगे बढ़ता रहेगा और अपने विचारों को अभिव्यक्ति देता रहेगा और एक दूसरे के विचारों तक पहुँचने के लिए सहायता देता रहेगा।''*

प्रो. वृषभ प्रसाद जैन ने समारोह की अध्यक्षता की। उन्होंने अपने अध्यक्षीय भाषण में काव्य-शिक्षण में गेयता की आवश्यकता का वर्णन करते हुए कहा कि *''कविता पद्य तक सीमित नहीं होती। कविता गद्य तक भी जाती है।...कविता के पाठ, उसके लय तथा उसकी प्रकृति को समझकर पढ़ाना चाहिए।''*

इस अवसर पर महात्मा गांधी संस्थान के हिंदी विभाग की व्याख्याता, डॉ. लक्ष्मी झमन ने 'मध्यकालीन काव्य-शिक्षण में गीतों का प्रयोग' विषय पर अपने विचार व्यक्त किए। उन्होंने कहा कि *''कविता को गेय बना दें तो कहते हैं वह याद रहती है, क्योंकि शब्द छूट जाते हैं, शब्द हम भूल जाते हैं, पर जो शब्द गेय बनकर होठों को छू ले वे भूलाए नहीं भूलते।''*

मणिलाल डॉक्टर एस.एस.एस. के हिंदी शिक्षक श्री लेखराजसिंह पांडोही ने *'आधुनिक काव्य-शिक्षण में गीतों का प्रयोग'* विषय पर अपने विचार व्यक्त किए। उन्होंने बताया कि काव्य को संगीतबद्ध कर अगर भाव, रस, अभिनय और उमंग के साथ प्रस्तुत किया जाए, तो काव्य में विद्यार्थियों की अरुचि का प्रश्न ही नहीं उठेगा।

विचार-मंच के दौरान परिचर्चा-सत्र भी रखा गया था, जिसमें उपस्थित अतिथियों ने उत्साहपूर्वक भाग लिया।

इस अवसर पर कई हिंदी प्रेमी, हिंदी प्राध्यापक, शिक्षक व छात्र उपस्थित थे। मंच-संचालन डॉ. माधुरी रामधारी तथा धन्यवाद-ज्ञापन प्रो. विनोद कुमार मिश्र ने किया।

विश्व हिंदी सचिवालय की रिपोर्ट

सम्मेलन, संगोष्ठी, कार्यशाला, परिचर्चा, अधिवेशन, व्याख्यान, समारोह

अंतरराष्ट्रीय साहित्य-संवाद

20 एवं 21 फ़रवरी, 2018 को साहित्य अकादमी-भोपाल द्वारा अंतरराष्ट्रीय साहित्य-संवाद का आयोजन किया गया। अकादमी के निदेशक डॉ. उमेश कुमार सिंह ने उद्घाटन वक्तव्य दिया। प्रथम दिन के प्रथम सत्र का विषय 'विश्व कल्याण और भारतीय ज्ञान सम्पदा', दूसरे सत्र का विषय 'भारतीय साहित्य का भावात्मक अंत: सम्बन्ध' तथा तीसरे सत्र का विषय 'भारतीय सांस्कृतिक मूल्यों की संवाहक-हिंदी' रहा। इन सत्रों में देश-विदेश के कई विद्वान जनों ने भाग लिया।

दूसरे दिन का विषय 'वैश्विक परिदृश्य और हिंदी की भूमिका' था जिसकी अध्यक्षता हिंदी प्रचारिणी सभा के प्रधान श्री यंतुदेव बूधू ने की। इस सत्र में कई देशों के विद्वानों ने भाग लिया, जिनमें यू.के., स्विटज़रलैंड तथा भारत के कई प्रांतों से लोग पधारे। 'राष्ट्रधर्म और विश्व चेतना' समापन-समारोह का विषय रखा गया था। कार्यक्रम के दौरान कई पुस्तकों का लोकार्पण भी हुआ।

इस अवसर पर बड़ौदा बैंक-मुंबई के प्रबंधक श्री जवाहर कर्णावट के सहयोग से यू.के की प्रख्यात लेखिका श्रीमती उषा राजे सक्सेना तथा श्री यंतुदेव बूधू के आतिथ्य में अंतरराष्ट्रीय मातृभाषा दिवस भी मनाया गया। श्री यंतुदेव बूधू ने कहा कि ***"हम अपने देश में मातृ दिवस तो मनाते हैं, पर 'मातृभाषा दिवस' पहली बार सुना। मेरे लिए आश्चर्य वाली बात यह है कि हिंदी के क्षेत्र से अलग नौकरी करनेवाले बैंक के कर्मचारियों को हिंदी भाषा के प्रति इतना लगाव है।"*** श्री जवाहर कर्णावट बड़ौदा बैंक-मुंबई के प्रबंधक तथा श्री आर.एल.चौहान भोपाल बड़ौदा बैंक के प्रबंधक ने मातृभाषा दिवस पर अपने-अपने विचार प्रस्तुत किए। श्री यंतुदेव बुधु ने हिंदी प्रचारिणी सभा द्वारा हिंदी भाषा के उत्थान हेतु भावी योजनाओं का उल्लेख किया।

श्री यंतुदेव बुधु की रिपोर्ट

एक दिवसीय क्षेत्रीय राजभाषा सम्मेलन तथा पुरस्कार वितरण समारोह

9 फ़रवरी, 2018 को डीरेका में एक दिवसीय क्षेत्रीय राजभाषा सम्मेलन तथा पुरस्कार वितरण समारोह का आयोजन किया गया। समारोह के मुख्य अतिथि उत्तर प्रदेश के राज्यपाल, माननीय श्री राम नाईक रहे तथा मुख्य सचिव, श्री राजीव कुमार विशिष्ट अतिथि रहे। समारोह की अध्यक्षता राजभाषा के सचिव श्री प्रभास कुमार झा ने की। श्री राम नाईक ने राजभाषा हिंदी को हमारी उन्नति की परिचायिका होने पर एवं राष्ट्रीयता और सशक्तीकरण में हिंदी के योगदान की बात कही। साथ-साथ उन्होंने प्रशासनिक क्षेत्र में, कार्यालयों में हिंदी के इस्तेमाल का सुझाव भी दिया। इस अवसर पर हिंदी में विशिष्ट कार्य करनेवाले लोगों को सम्मानित किया गया तथा 'गौतमी' पत्रिका का विमोचन भी किया गया।

साभार : अमर उजाला.कॉम

पश्चिम तथा मध्य क्षेत्रों का राजभाषा सम्मेलन तथा पुरस्कार वितरण समारोह

12 जनवरी, 2018 को राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय, भारत सरकार द्वारा राष्ट्रीय केमिकल्स एंड फ़र्टिलाइज़र्स लिमिटेड के देशमुख सभागार, मुंबई में मध्य प्रदेश और पश्चिमी क्षेत्रों में स्थित केंद्र सरकार के कार्यालयों, बैंकों एवं उपक्रमों इत्यादि के लिए संयुक्त क्षेत्रीय राजभाषा सम्मेलन एवं पुरस्कार वितरण समारोह वर्ष 2017-2018 का आयोजन किया गया। सम्मेलन की अध्यक्षता महाराष्ट्र के माननीय राज्यपाल, श्री चेन्नमनेनी विद्यासागर राव ने की। भारतीय स्टेट बैंक के अध्यक्ष, श्री रजनीश कुमार मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थित थे। श्री चेन्नमनेनी विद्यासागर राव ने कहा कि विभिन्न क्षेत्रों की प्राकृतिक भाषाएँ यदि फूल हैं, तो हिंदी भाषा धागे का कार्य कर रही है तथा देश की एकता, सार्वभौमिकता तथा

अक्षुण्णता में हिंदी भाषा का महत्त्वपूर्ण योगदान है। कार्यक्रम में अपने विचार व्यक्त करते हुए श्री रजनीश कुमार ने राजभाषा हिंदी को व्यवहार में लाने की बात कही। इस अवसर पर गृह मंत्रालय की पत्रिका 'राजभाषा भारती' के 152वें अंक का भी विमोचन किया गया।

साभार : बिज़नेस न्यूज़ ट्रेंड्स.ब्लॉगस्पॉट.कॉम

'वैश्विक परिदृश्य में हिंदी' विषयक वैश्विक हिंदी संगोष्ठी

9 फ़रवरी, 2018 को मुंबई में वैश्विक हिंदी सम्मेलन तथा मुंबई रेल कॉर्पोरेशन के संयुक्त तत्वावधान में वैश्विक संगोष्ठी का आयोजन किया गया। मुख्य अतिथि एवं मुख्य वक्ता मॉरीशसीय वरिष्ठ साहित्यकार श्री रामदेव धुरंधर रहे। संगोष्ठी के अंतर्गत श्रीमती मनप्रीत आर्य, प्रो. करुणा शंकर उपाध्याय, डॉ. एम. एल. गुप्त, श्री दिनेश गुप्त, डॉ. सतीश पांडेय, श्री राजेंद्र सिंह रावत, श्री प्रदीप गुप्त, श्रीमती शील निगम, श्री हरि वाणी व श्री राहुल खरे आदि ने अपने-अपने विचार व्यक्त करते हुए हिंदी के प्रयोग व उसके प्रचार-प्रसार के महत्त्वपूर्ण बिंदुओं को रेखांकित किया। इसके अतिरिक्त कार्यक्रम के दौरान श्री रामदेव

धुरंधर को 'वैश्विक हिंदी साहित्य सम्मान' से विभूषित किया गया। उन्होंने वैश्विक संगोष्ठी में भाग लेना एक स्वर्णिम अवसर माना, जिसके माध्यम से वे मुंबई व मुंबई के बाहर के लेखकों, विद्वानों और भारतीय भाषा प्रेमियों के विचार जान पाए। समारोह का संचालन डॉ. एम. एल. गुप्त 'आदित्य' ने किया तथा धन्यवाद-ज्ञापन श्रीमती स्मृति जैकब ने किया।

साभार : विजयलक्ष्मी जैन, वैश्विक हिंदी सम्मेलन

'संस्कृत की प्रासंगिकता, संभावनाएँ' विषयक दो दिवसीय राष्ट्रीय परिचर्चा

11-12 फ़रवरी, 2018 को महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय, वर्धा एवं संस्कृत भारती की ओर से 'संस्कृत की प्रासंगिकता, संभावनाएँ' विषय पर दो दिवसीय राष्ट्रीय परिचर्चा का आयोजन किया गया। वर्धा के नगराध्यक्ष, श्री अतुल तराले तथा सहमंत्री, श्री संजीव लाभे विशिष्ट अतिथि के रूप में उपस्थित थे। उद्घाटन सत्र की अध्यक्षता प्रतिकुलपति प्रो. आनंद वर्धन शर्मा ने की तथा कविकुलगुरू कालिदास संस्कृत विश्वविद्यालय, रामटेक के कुलपति, प्रो. श्रीनिवास वरखेड़े मुख्य वक्ता रहे। प्रो. आनंद वर्धन शर्मा ने कहा कि संस्कृत भारत के अतीत से जुड़ी हुई भाषा है तथा इस भाषा में ज्ञान-विज्ञान, साहित्य एवं कलाओं का भंडार उपलब्ध है। प्रो. श्रीनिवास वरखेडे ने अपने विचार व्यक्त करते हुए संस्कृत भाषा के महत्त्व को उजागर किया।

दूसरे दिन मुख्य अतिथि डॉ. पंकज भोयर रहे तथा प्रो. रमेशचंद्र पण्डा मुख्य वक्ता रहे, जिन्होंने संस्कृत की प्रासंगिकता पर बात की। डॉ. पंकज भोयर ने आनेवाली पीढ़ी को संस्कृत सीखने हेतु प्रेरित किया। समारोह में अध्यापकों के साथ वर्धा के विभिन्न महाविद्यालयों के विद्यार्थी तथा अन्य गण्यमान्य अतिथि उपस्थित थे। समारोह का संचालन प्रो. भरत पंडा ने किया तथा धन्यवाद-ज्ञापन प्रो. प्रीति सागर ने किया।

श्री बी. एस. मिरगे की रिपोर्ट

5वाँ अंतरराष्ट्रीय हिंदी अधिवेशन

16 जनवरी, 2018 को हंसराज कॉलिज, नई दिल्ली में भाषा सहोदरी द्वारा 5वें अंतरराष्ट्रीय हिंदी अधिवेशन का आयोजन किया गया। समारोह के मुख्य अतिथि सांसद श्री शरद यादव रहे तथा श्री संजय जोशी, डॉ. रमा शर्मा, श्री जय कांत

मिश्र एवं डॉ. आशीष कंधवे विशिष्ट अतिथि के रूप में उपस्थित थे। अध्यक्षता सांसद श्री डी. पी. त्रिपाठी ने की। लगभग 10 राज्यों से आए 200 प्रतिनिधियों ने इस अधिवेशन में भाग लिया। इस अवसर पर 4 पुस्तकों का लोकार्पण किया गया।

डॉ. आशीष कंधवे की रिपोर्ट

'नीदरलैंड में हिंदी भाषा और देवनागरी लिपि की स्थिति' विषयक व्याख्यान माला

29 जनवरी, 2018 को के. आई. आई. टी. परिसर, गुरुग्राम में विश्व नागरी विज्ञान संस्थान द्वारा 'नीदरलैंड में हिंदी भाषा और देवनागरी लिपि की स्थिति' विषयक व्याख्यान माला का आयोजन किया गया, जिसमें नीदरलैंड की हिंदी साहित्यकार, डॉ. पुष्पिता अवस्थी ने विषय पर अपना व्याख्यान दिया। समारोह की अध्यक्षता संस्थान के अध्यक्ष, श्री बलदेव राज कामराह ने की। संस्थान के महासचिव, प्रो. कृष्ण कुमार गोस्वामी ने डॉ. पुष्पिता अवस्थी की रचनाओं को श्रोताओं के समक्ष प्रस्तुत किया। इसके पश्चात् डॉ. पुष्पिता अवस्थी ने अपने व्याख्यान में कहा कि नीदरलैंड में हिंदी सीखना अपनी संस्कृति सीखना माना जाता है तथा भारतीय सांस्कृतिक केंद्र में हिंदी का प्रयोग होता है। उन्होंने हिंदी के लिए देवनागरी लिपि को आवश्यक बताते हुए कहा कि देवनागरी लिपि भाषा की देह और आकृति है। उन्होंने नीदरलैंड में देवनागरी लिपि के विकास हेतु प्रयास करने पर बल दिया। इस अवसर पर कई हिंदी प्रेमियों की उपस्थिति रही। धन्यवाद-ज्ञापन प्रो. मंजीत सेनगुप्त ने किया।

प्रो. कृष्ण कुमार गोस्वामी की रिपोर्ट

20वाँ स्थापना दिवस समारोह

8 जनवरी, 2018 को अनुवाद एवं निर्वचन विद्यापीठ भवन के प्रांगण में स्थित 'भारतेंदु सभा मंडप' में महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय, वर्धा का 20वाँ स्थापना-दिवस मनाया गया। स्वागत वक्तव्य प्रतिकुलपति प्रो. आनंद वर्धन शर्मा ने दिया।

समारोह के मुख्य अतिथि पश्चिम बंगाल के राज्यपाल, माननीय श्री केशरी नाथ त्रिपाठी रहे तथा लोकसभा निर्वाचन क्षेत्र के सांसद, श्री रामदास तडस विशिष्ट अतिथि रहे। अध्यक्षता विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. गिरीश्वर मिश्र ने की। माननीय श्री केशरी नाथ त्रिपाठी ने अपने उद्बोधन में कहा कि हिंदी हमारी राष्ट्रीय पहचान, स्वाभिमान और सम्मान की भाषा बने, इसके लिए प्रयासरत होना चाहिए तथा हिंदी को तकनीकी के साथ जोड़कर बदलती आवश्यकताओं के अनुसार हिंदी भाषा के शब्द खोजने की आवश्यकता है।

भारतीय जनसंचार संस्थान, नई दिल्ली के महानिदेशक, डॉ. के. जी. सुरेश मुख्य वक्ता के रूप में उपस्थित रहे, जिन्होंने 'शिक्षा का वैश्विक परिदृश्य और भारतीय शिक्षा प्रणाली' विषय पर वक्तव्य देते हुए वर्तमान शिक्षा नीति और शिक्षा का व्यावसायीकरण, सरकारों के प्रयास, अभिभावकों की ज़िम्मेदारी, शिक्षा में शोध गुणवत्ता, अल्पसंख्यक संस्थाओं को कानून के दायरों के बाहर रखा जाना, शिक्षा पद्धति में पदोन्नति के नियम आदि की चर्चा की एवं गुणवत्ता की चुनौतियों पर अपने विचार रखे।

समारोह में देश एवं विदेश की विभिन्न भाषाओं के साहित्यकारों को विश्वविद्यालय की ओर से हिंदी सेवी सम्मान' से सम्मानित किया गया, जिनमें मध्य प्रदेश की मालती जोशी, ओडिशा के डॉ. राजेंद्र प्रसाद मिश्र, लंदन के श्री तेजेंद्र कुमार शर्मा, दिल्ली के डॉ. रणजीत साहा, जर्मनी के डॉ. तात्याना ओरांसकाइया, बल्गारिया के प्रो. मिलेना ब्राटोइएवा, तमिलनाडु के डॉ. पी. के. सुब्रमण्यम् तथा महाराष्ट्र के श्री सुरेश शर्मा शामिल हैं।

समारोह में विश्वविद्यालय के प्रतिकुलपति प्रो. आनंद वर्धन शर्मा, कुलसचिव कादर नवाज़ ख़ान, प्रो. मनोज कुमार, प्रो. हनुमान प्रसाद शुक्ल, प्रो. देवराज, प्रो. एल. कारूण्यकरा शामिल रहे।

समारोह का संचालन साहित्य विद्यापीठ की संकायाध्यक्षा, डॉ. प्रीति सागर ने किया तथा धन्यवाद-ज्ञापन कुलसचिव श्री कादर नवाज़ ख़ान ने किया।

श्री बी. एस. मिरगे की रिपोर्ट

सी-डैक का 31वाँ स्थापना दिवस

18 मार्च, 2018 को पुणे में सी-डैक ने अपना 31वाँ स्थापना दिवस मनाया। समारोह के दौरान कई वक्ताओं ने अपने विचार व्यक्त किए। डॉ. अशोक चक्रधर ने हिंदी के प्रचार-प्रसार, प्रयोग में प्रौद्योगिकी के समावेश की आवश्यकता की व्याख्या की। सी-डैक के भाषा संबंधी सॉफ़्टवेयर व उपकरणों की उपलब्धता जनमानस के लिए महत्त्वपूर्ण है, जिससे हिंदी को सरलता से सीखा जा सकता है। डॉ. विजय भटकर ने अपने वक्तव्य में हिंदी को प्रौद्योगिकी के माध्यम से अधिक सशक्त और व्यापक बनाने की अपील की।

श्री विनय के. मलहोत्रा की रिपोर्ट

लोकार्पण

श्री संजीव चंदन के कहानी-संग्रह '546वीं सीट की स्त्री' का लोकार्पण व परिचर्चा

17 जनवरी, 2018 को पी. जी. मेंस हॉस्टल, दिल्ली विश्वविद्यालय में श्री संजीव चंदन के कहानी-संग्रह '546वीं सीट की स्त्री' का लोकार्पण तथा 'कथा में स्त्री' विषय पर परिचर्चा का आयोजन किया गया। परिचर्चा की अध्यक्षता कवयित्री अनामिका ने की। इस अवसर पर रोहिणी अग्रवाल, आलोचक कवितेंद्र, बजरंग बिहारी तिवारी, लेखिका रजनी सिसोदिया, कथाकार टेकचंद, अल्पना मिश्र, रंगकर्मी और लेखिका नूर ज़हीर तथा कवयित्री अनामिका आदि ने पुस्तक पर अपने विचार व्यक्त किए व परिचर्चा सत्र के दौरान विषय पर भी बात की। मंच-संचालन श्री धर्मवीर ने किया तथा रानी कुमारी ने धन्यवाद-ज्ञापन किया।

साभार : स्त्रीकाल.कॉम

काव्य-संग्रह 'शब्द मुखर है' का विमोचन

7 जनवरी, 2018 को सफ़ारी होटल, जयपुर में संपर्क संस्थान के तत्वावधान में कवयित्री रेणु शर्मा द्वारा संपादित काव्य-संग्रह 'शब्द मुखर है' का विमोचन संपन्न हुआ। इस अवसर पर कार्यक्रम के मुख्य अतिथि राजस्थान साहित्य अकादमी के अध्यक्ष, डॉ. इंदुशेखर तत्पुरुष रहे तथा अध्यक्षता वरिष्ठ भारतीय प्रशासनिक सेवा के अधिकारी तथा बीकानेर विश्वविद्यालय के कुलसचिव, श्री मनोज शर्मा ने की। लोकार्पण विशिष्ट अतिथि के रूप में उपस्थित श्री सुरेश ज्ञानविहार यूनिवर्सिटी के चेयरमैन श्री सुनील शर्मा, सम्पर्क संस्थान के महासचिव विश्वमल चौहान,

राजस्थान लेखिका संस्थान की अध्यक्षा, वीणा चौहान तथा वरिष्ठ साहित्यकार डॉ. नरेंद्र शर्मा व नंद भारद्वाज के हाथों संपन्न हुआ।

साभार : गीतांजलि पोस्ट.कॉम

श्री चंद्रपाल सिंह यादव के दो कहानी-संग्रहों का लोकार्पण

7 जनवरी, 2018 को आबूलेन स्थित न्यू भगवान पैलेस, मेरठ में जन साहित्य मंच व उत्कर्ष प्रकाशन द्वारा श्री चंद्रपाल सिंह यादव के दो कहानी-संग्रहों का लोकार्पण तथा सम्मान समारोह का आयोजन किया गया। समारोह के मुख्य अतिथि डॉ. वेद प्रकाश बटुक तथा विशिष्ट अतिथि श्री कुलभूषण वार्ष्णेय रहे। इस अवसर पर श्री चंद्रपाल सिंह यादव की पुस्तकों-'कहानियाँ कुदरत की' व 'किशोरावस्था प्रेरक कहानियाँ' का विमोचन किया गया। शिक्षा, साहित्य

आदि क्षेत्रों में महत्त्वपूर्ण योगदान देनेवाले 21 लोगों को सम्मानित किया गया। समारोह में श्री प्रभात राय, डॉ. वी. एस. यादव, डॉ. जयप्रकाश प्रेमदेव व कर्नल एम. एस. यादव ने वर्तमान साहित्य की दशा पर प्रकाश डाला व इसके प्रचार-प्रसार पर भी चर्चा की। इसके अतिरिक्त उपस्थित कवियों द्वारा काव्य-पाठ किया गया। मंच-संचालन श्री गिरीश शुक्ल ने किया।

साभार : लाइव हिंदुस्तान.कॉम

श्री रामनारायण रमण कृत नवगीत-संग्रह 'नदी कहना जानती है' का लोकार्पण

11 मार्च, 2018 को लेखपाल संघ सभागार, रायबरेली में वरिष्ठ साहित्यकार श्री रामनारायण रमण की सद्य: प्रकाशित नवगीत-संग्रह *'नदी कहना जानती है'* का लोकार्पण किया गया। समारोह की अध्यक्षता वरिष्ठ साहित्यकार व आलोचक डॉ. ओमप्रकाश सिंह ने की। समारोह के मुख्य अतिथि युवा कवि व आलोचक श्री अवनीश सिंह चौहान रहे तथा श्री नाज़ प्रतापगढ़ी विशिष्ट अतिथि रहे। डॉ. ओमप्रकाश सिंह ने पुस्तक का परिचय दिया। समारोह में परिचर्चा हुई, जिसके दौरान उपस्थित विभिन्न साहित्यकारों ने कहा कि रमण जी का साहित्य समाज एवं संस्कृति को पूरी वस्तुनिष्ठता तथा मौलिकता से प्रस्तुत करता है। मंच-संचालन श्री जय चक्रवर्ती तथा डॉ. विनय भदौरिया ने किया तथा आभार-ज्ञापन श्री रमाकांत ने किया।

श्री अवनीश सिंह चौहान की रिपोर्ट

डॉ. राकेश चक्र की पुस्तक 'धार अपनी खुद बनाना' का लोकार्पण एवं काव्य-गोष्ठी

14 जनवरी, 2018 को मुरादाबाद की साहित्यिक संस्था 'राष्ट्रभाषा हिंदी प्रचार समिति' के तत्वावधान में लाइनपार, विश्नोई धर्मशाला में लोकार्पण समारोह एवं काव्य-गोष्ठी का आयोजन किया गया। इस अवसर पर डॉ. राकेश चक्र की पुस्तक 'धार अपनी खुद बनाना' का लोकार्पण किया गया। वरिष्ठ गीतकार श्री शचीद्र भटनागर मुख्य अतिथि तथा वरिष्ठ साहित्यकार डॉ. महेश दिवाकर विशिष्ट अतिथि के रूप में उपस्थित थे। कार्यक्रम की अध्यक्षता श्री रमेश यादव ने की। इस अवसर पर डॉ. महेश दिवाकर, श्री शचीद्र भटनागर तथा योगेन्द्र वर्मा 'व्योम' ने कृति के संदर्भ में समीक्षात्मक उद्बोधन प्रस्तुत किया। लोकार्पण के पश्चात् काव्य-गोष्ठी आयोजित की गई। कार्यक्रम में उपस्थित कवियों ने सामाजिक तथा राजनीतिक आदि विषयों पर अपनी रचनाएँ प्रस्तुत कीं। इस अवसर पर सर्वश्री अशोक विश्नोई, विवेक निर्मल, राजीव प्रखर, रामदत्त द्विवेदी, रामेश्वर वशिष्ठम राजेश्वर प्रसाद गहोई, मोनिका मासूम सहित अनेक स्थानीय साहित्यकारों की उपस्थिति रही। कार्यक्रम का संचालन कवि श्री राम सिंह निशंक ने किया व आभार-ज्ञापन संस्था के अध्यक्ष, श्री योगेन्द्रपाल सिंह विश्नोई ने किया।

साभार : साहित्य मुरादाबाद ब्लॉग

पुरस्कार व सम्मान

मॉरीशसीय लेखक श्री प्रह्लाद रामशरण को 'हिंदी रत्न सम्मान'

1 अगस्त, 2017 को हिंदी भवन, नई दिल्ली में मॉरीशसीय लेखक, श्री प्रह्लाद रामशरण को 'हिंदी रत्न सम्मान' से विभूषित किया गया। समारोह के मुख्य अतिथि, मॉरीशसीय उच्चायुक्त महामहिम श्री जगदीश गोवर्धन रहे तथा

अध्यक्षता केंद्रीय हिंदी संस्थान के उपाध्यक्ष, डॉ. कमल किशोर गोयनका ने की। यह सम्मान राजश्री पुरुषोत्तम टंडन के जन्म तथा पंडित भीमसेन विद्यालंकार की स्मृति में दिया जाता है। डॉ. गोयनका, महामहिम श्री जगदीश गोवर्धन तथा श्री गोविंद व्यास ने श्री प्रह्लाद रामशरण के जीवन, परिश्रम, साहित्यिक यात्रा एवं सफलता पर अपने विचार व्यक्त किए। श्री प्रह्लाद रामशरण ने अपने वक्तव्य में अपने बचपन, पढ़ाई, व्यावसायिक एवं साहित्यिक उपलब्धियों तथा विभिन्न प्रकाशनों आदि पर बात की। समारोह का संचालन श्रीमती सरला माहेश्वरी ने की।

साभार : ले-मोरिस्यें समाचार-पत्र

साहित्य अकादमी पुरस्कार समारोह

12 फ़रवरी, 2018 को साहित्य अकादमी, नई दिल्ली के वार्षिक महोत्सव, 'फ़ेस्टीवल ऑव लेटर्स' के उपलक्ष्य में विभिन्न भाषाओं के 23 लेखकों को सम्मानित किया गया। साहित्य अकादमी के अध्यक्ष, श्री चंद्रशेखर कंबार ने कहा कि 'अकादमी देश के समृद्ध एवं विविध साहित्यों को यहाँ साथ लाना जारी रखेगी'। अंग्रेज़ी, हिंदी, बोडो, तेलुगू और पंजाबी सहित सभी 23 भाषाओं में लिखे गये - 'उपन्यास, कविता, लघु-कहानी, आलोचना, नाटक और निबंध' आदि विधाओं में अधिकतर पुरस्कृत पुस्तकें समाज और सामाजिक मुद्दों पर केंद्रित हैं। कार्यक्रम में रमेश कुंतल मेघ (हिंदी), श्री उदय नारायण सिंह (मैथिली), श्री श्रीकांत देशमुख (मराठी), श्री भुजंग तुडू (संथाली), श्री निरंजन मिश्र (संस्कृत), श्री टी. देवीप्रिय (तेलुगू), श्री शिव मेहता (डोगरी), श्री गजानन जोग (कोंकणी), गायत्री सर्राफ़ (उड़िया), मोहम्मद बेग एहसास (उर्दू), ममांग

दई (अंग्रेज़ी), श्री अफ़सार अहमद (बांग्ला), श्री जयंत माधव बोरा (कन्नड), रीता बोरा (बोडो), उर्मी घनश्याम देसाई (गुजराती), टी. पी. अशोक (कन्नड़), बीना हंगखिम (नेपाली), श्री नीरज दइया (राजस्थानी), श्री जगदीश लछानी (सिंधी), श्री राजेन ताइजांबा (मणिपुरी), श्री अवतार कृष्ण रहबर (कश्मीरी), इंकलाब (तमिल), श्री के. पी. रामनुन्नी (मलयालम) तथा नछत्तर (पंजाबी) को सम्मानित किया गया।

साभार : ज़ी न्यूज़.इंडिया.कॉम तथा आउटलुक हिंदी.कॉम

श्रीलाल शुक्ल स्मृति इफ़को साहित्य सम्मान समारोह

31 जनवरी, 2018 को एन.सी.यू.आई सभागार, नई दिल्ली में आयोजित श्रीलाल शुक्ल स्मृति इफ़को साहित्य सम्मान समारोह के दौरान मॉरीशस के वरिष्ठ कथाकार, श्री रामदेव धुरंधर को सुविख्यात साहित्यकार श्री गिरिराज किशोर के हाथों 6 खंडों में प्रकाशित उनके चर्चित उपन्यास 'पथरीला सोना' के लिए वर्ष 2017 का श्रीलाल शुक्ल स्मृति इफ़को साहित्य सम्मान प्रदान किया गया। समारोह के मुख्य अतिथि, श्री गिरिराज किशोर रहे तथा प्रथम सचिव श्री वी. चिट्टू विशिष्ट अतिथि के रूप में उपस्थित रहे। समारोह साहित्यकार एवं सांसद श्री देवी प्रसाद त्रिपाठी की अध्यक्षता में संपन्न हुआ, जिन्होंने धुरंधर जी के साहित्य को किसानों और मज़दूरों को समर्पित बताया। इफ़को के प्रबंध निदेशक, डॉ. उदय शंकर अवस्थी ने स्वागत-भाषण देते हुए कहा कि श्री धुरंधर उन कम लेखकों में से एक हैं, जिन्होंने कृषि और किसानों जीवन पर लिखा तथा उनका विपुल साहित्य पूरी तरह किसानों का आर्त्तस्वर मुखरित करता है। श्री गिरिराज किशोर ने कहा कि धुरंधर जी की कृतियों पर प्रेमचंद की छाप है तथा उनकी रचनाओं में किसानों की व्यथा को दर्शाया गया है। इस अवसर पर श्रीलाल शुक्ल के उपन्यास 'अज्ञातवास' पर आधारित नाटक का मंचन भी किया गया। समारोह के दौरान कवि-सम्मेलन का आयोजन हुआ, जिसमें उपस्थित साहित्य प्रेमियों ने कविता-पाठ किया। श्री धुरंधर की रचनाओं में 'छोटी मछली बड़ी मछली', 'चेहरों का आदमी', 'बनते बिगड़ते रिश्ते', 'पूछो इस माटी से' जैसे उपन्यास, 'विष मंथन', 'जन्म की एक भूल' जैसे कहानी-संग्रह आदि शामिल हैं।

साभार : पहली बार.ब्लॉगस्पॉट.कॉम

श्रद्धांजलि

श्री दूधनाथ सिंह

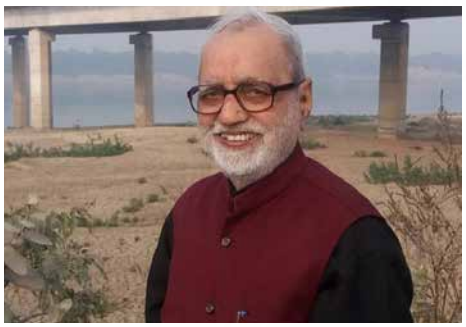

11 जनवरी, 2018 को हिंदी के प्रसिद्ध कहानीकार, उपन्यासकार, नाटककार एवं कवि, श्री दूधनाथ सिंह का 81 वर्ष की आयु में निधन हो गया। आपका जन्म 17 अक्तूबर, 1936 को उत्तर प्रदेश के बलिया ज़िले के सोबंथा गाँव में हुआ था। इलाहाबाद विश्वविद्यालय से हिंदी साहित्य में एम. ए. करने के पश्चात् आप कलकत्ता में प्राध्यापक रहे तथा सेवानिवृत्ति के बाद लेखन में समर्पित हो गए। आपको 'भारतेंदु सम्मान', 'शरद जोशी स्मृति सम्मान', 'कथाक्रम सम्मान', 'साहित्य भूषण सम्मान' आदि से सम्मानित किया गया है। आपकी प्रमुख कृतियों में 'आखिरी कलाम', 'लौट आओ धार', 'निराला : आत्महंता आस्था', 'सपाट चेहरे वाला आदमी', 'यमगाथा', 'धर्मक्षेत्रे कुरुक्षेत्रे' जैसी कालजयी कृतियाँ, 'एक और भी आदमी है', 'अगली शताब्दी के नाम' और 'युवा खुशबू' जैसे कविता-संग्रह, 'सुरंग से लौटते हुए' जैसी कविता, 'महादेवी', 'मुक्तिबोध : साहित्य में नई प्रवृत्तियाँ' जैसी आलोचनात्मक रचनाएँ शामिल हैं। आपने साठोत्तरी कहानी आंदोलन का सूत्रपात किया था तथा पारिवारिक, सामाजिक, आर्थिक व नैतिक आदि क्षेत्रों में उत्पन्न विसंगतियों को अपनी रचनाओं द्वारा चुनौतियाँ दीं।

साभार : भारत डिस्कॉवरी.ऑर्ग

श्री मुज़फ़्फ़र हुसैन

13 फ़रवरी, 2018 को प्रसिद्ध चिंतक, लेखक और पत्रकार श्री मुज़फ़्फ़र हुसैन का 72 वर्ष की आयु में निधन हो गया। आपका जन्म 20 मार्च, 1945 को राजस्थान के बिजोलिया में हुआ था। आपने नीमच विश्वविद्यालय से स्नातक की उपाधि प्राप्त की तथा इसके बाद एल. एल. बी. की पढ़ाई करने गए। व्यवसाय के रूप में आपने पत्रकारिता को अपनाया। आप राष्ट्रीय उर्दू काउंसिल के उपाध्यक्ष भी रहे। आपने औरंगाबाद के दैनिक 'देवगिरी समाचार' के सलाहकार संपादक के पद पर भी कार्य किया। आपको 2002 में 'पद्मश्री', 2014 में महाराष्ट्र सरकार द्वारा पत्रकारिता हेतु 'लोकमान्य तिलक पुरस्कार' तथा 'जीवन गौरव पुरस्कार' से सम्मानित किया गया है। हिंदी, उर्दू, मराठी एवं गुजराती पर अच्छी पकड़ होने के कारण इन भाषाओं के अखबारों में आपके लेख प्रकाशित होते रहे हैं। आपने मराठी, हिंदी एवं गुजराती में 9 पुस्तकें लिखीं। इनमें से 'इस्लाम और शाकाहार', 'अल्पसंख्यकवाद के खतरे', 'मुस्लिम मानस' आदि प्रमुख हैं।

साभार : विकिपीडीया

श्रीलाल जोशी

17 फ़रवरी, 2018 को हिंदी व मायड़ भाषा के वरिष्ठ साहित्यकार, श्रीलाल जोशी का निधन हो गया।

आपका जन्म 1956 में हुआ था। आप समवेत संस्था के सचिव पद पर कार्यरत थे। साहित्य के साथ-साथ आप पत्रकारिता से भी जुड़े हुए थे। आपकी रचनाओं में हिंदी कहानी-संग्रह 'मिनख कमाने का सुख' एवं राजस्थानी कहानी-संग्रह 'नाथुम्ब' शामिल हैं।

साभार : बीकानेर प्राइड.इन

विश्व हिंदी सचिवालय तथा समस्त हिंदी जगत् की ओर से पुण्यात्माओं को भावभीनी श्रद्धांजलि।

'विश्व हिंदी पत्रिका 2018' के लिए शोध आलेख आमंत्रित

विश्व हिंदी पत्रिका विश्व हिंदी सचिवालय, मॉरीशस की वार्षिक अंतरराष्ट्रीय पत्रिका है, जिसमें वैश्विक परिप्रेक्ष्य में हिंदी की स्थिति, हिंदी का उद्भव और विकास, हिंदी के क्षेत्र में हो रहे अनुसंधान, हिंदी शिक्षण व अधिगम से संबंधित महत्त्वपूर्ण मौलिक व शोधपरक आलेख प्रकाशित किए जाते हैं। विश्व हिंदी पत्रिका के पूर्व अंक सचिवालय के वेबसाइट www.vishwahindi.com पर उपलब्ध हैं।

पत्रिका के आगामी 10वें अंक के लिए सचिवालय विश्व भर के हिंदी विद्वानों, शोधार्थियों व हिंदी चिंतकों की ओर से शोध आलेख आमंत्रित कर रहा है।

नियम व शर्तें :

- लेख का शोधपरक होना अनिवार्य है।
- लेख लगभग 2500 शब्द संख्या का होना चाहिए।
- संपादक मंडल द्वारा स्वीकृति मिलने पर ही आलेख प्रकाशित किया जाएगा।
- संपादक मंडल द्वारा लेख स्वीकृत होने की स्थिति में मौलिक तथा अप्रकाशित लेखों के लिए विनम्र मानदेय का प्रावधान है।
- लेखक का संक्षिप्त परिचय, पासपोर्ट आकार का फ़ोटो एवं लेख के मौलिक तथा अप्रकाशित होने का प्रमाण-पत्र भी भेजना अनिवार्य है।
- अंतिम तिथि 15 **अक्टूबर** 2018 है।
- आलेख डाक अथवा इ-मेल द्वारा भेजा जा सकता है।
- अधिक जानकारी के लिए फ़ोन, फ़ैक्स अथवा इ-मेल द्वारा संपर्क करें।

प्रधान संपादक	:	**प्रो. विनोद कुमार मिश्र**
संपादक	:	**डॉ. माधुरी रामधारी**
सहायक संपादक	:	**श्रीमती श्रद्धांजलि हजगैवी-बिहारी**
टंकण टीम	:	**श्रीमती त्रिशिला आपेगाडु, सुश्री जयश्री सिबालक, श्रीमती विजया सरजु**
पता	:	**विश्व हिंदी सचिवालय, इंडिपेंडेंस स्ट्रीट, फ़ेनिक्स** 73423, **मॉरीशस**
Address	:	World Hindi Secretariat, Independance Street, Phoenix 73423, Mauritius
फ़ोन/Phone	:	+230 660 0800
फ़ैक्स/Fax	:	+230 606 4855
ई-मेल/Email	:	info@vishwahindi.com
डेटाबेस/Database	:	www.vishwahindidb.com
वेबसाइट/Website	:	www.vishwahindi.com

संपादकीय

एक अनोखी उपलब्धि

11 फ़रवरी 2018 को विश्व हिंदी सचिवालय के आधिकारिक कार्यारम्भ दिवस की 10वीं वर्षगाँठ हर्षोल्लास पूर्वक मनाई गयी। दस वर्षों (2008-2018) तक विश्व हिंदी सचिवालय के कार्य फ़ॉरेस्ट साइड, क्यूर्पिप स्थित किराए के एक छोटे भवन में सीमित संसाधनों के साथ संचालित होते रहे। हिंदी का वैश्विक उन्नयन करने के प्रयास में सचिवालय ने मार्च 2008 से विश्व भर की हिंदी सम्बन्धी गतिविधियों की आवश्यक सूचनाएँ देने वाला सूचना-पत्र - 'विश्व हिंदी समाचार' और जनवरी 2009 से अलग-अलग देशों में हिंदी की दशा व दिशा की सटीक जानकारियाँ देने वाले शोध-परक लेखों से संपन्न पत्रिका - 'विश्व हिंदी पत्रिका' का प्रकाशन प्रारंभ किया। हर वर्ष सचिवालय के 'कार्यारम्भ दिवस' के उपलक्ष्य में भारत के किसी एक हिंदी विद्वान् को बीज वक्ता के रूप में सादर आमंत्रित किया जाता रहा है। इसी प्रकार हर वर्ष 'विश्व हिंदी दिवस' के अवसर पर भारत तथा मॉरीशस से भिन्न किसी एक देश के हिंदी के सक्रिय प्रचारक व विद्वान् को अतिथि वक्ता के रूप में निमंत्रित किया जाता रहा है। इस प्रकार देश-विदेश में हिंदी की स्थिति पर सारगर्भित व्याख्यानों एवं सार्थक परिचर्चाओं की लम्बी श्रृंखला प्रारंभ हुई।

इसके अतिरिक्त विश्व हिंदी सचिवालय ने अनेक सम्मेलनों, संगोष्ठियों, कार्यशालाओं, अन्तरराष्ट्रीय हिंदी प्रतियोगिताओं, साहित्यिक गतिविधियों एवं कार्यकारी मंडल व शासी परिषद् की बैठकों का आयोजन किया और विश्व भर के हिंदी विद्वानों एवं हिंदी प्रचारिणी संस्थाओं का डेटाबेस बनाकर अपने वेबसाइट पर लगाया। चर्चित गतिविधियों की सफल सम्पूर्ति विश्व हिंदी सचिवालय की महती उपलब्धियाँ मानी जा सकती हैं। परन्तु सर्वाधिक अनोखी उपलब्धि दस वर्षों के बाद 13 मार्च 2018 को भारत गणराज्य के राष्ट्रपति माननीय श्री राम नाथ कोविंद जी एवं मॉरीशस गणराज्य के प्रधान मंत्री माननीय श्री प्रवीण कुमार जगन्नाथ जी के कर-कमलों द्वारा फ़ेनिक्स के इंडिपेंडेंस स्ट्रीट, मॉरीशस में, विश्व हिंदी सचिवालय के मुख्यालय का औपचारिक उद्घाटन रही।

20 अगस्त 1999 को मॉरीशस सरकार ने विश्व हिंदी सचिवालय के भवन-निर्माण हेतु देश के केन्द्रीय इलाके के एक अत्यंत उत्कृष्ट स्थान, फ़ेनिक्स में 7542 वर्ग मीटर की ज़मीन प्रदान की थी और भारत सरकार ने भवन- निर्माण का खर्च वहन करने का दायित्व लिया था। 1 नवंबर 2001 को भारत के तत्कालीन मानव संसाधन विकास, विज्ञान व प्रौद्योगिकी तथा समुद्री विकास मंत्री माननीय श्री मुरली मनोहर जोशी जी ने सचिवालय के मुख्यालय का शिलान्यास किया था और 12 मार्च 2015 को भारत गणराज्य के प्रधान मंत्री माननीय श्री नरेंद्र मोदी जी तथा मॉरीशस गणराज्य के पूर्व प्रधान मंत्री माननीय श्री अनिरुद्ध जगन्नाथ, जी.सी.एस.के, के.सी.एम.जी, क्यू.सी के हाथों विश्व हिंदी सचिवालय के मुख्यालय-निर्माण का आधिकारिक शुभारम्भ किया गया। 8 अक्तूबर 2016 को सचिवालय के भवन-निर्माण स्थल पर मॉरीशस के पूर्व प्रधान मंत्री माननीय श्री अनिरुद्ध जगन्नाथ जी तथा भारतीय उच्चायुक्त महामहिम श्री अभय ठाकुर जी के कर-कमलों द्वारा भूमि-पूजन श्रद्धापूर्वक सम्पन्न हुआ। तदुपरान्त डेढ़ वर्ष की अवधि के अंदर फ़ेनिक्स की इसी अनुपम भूमि पर वास्तुकार श्री प्रवीण देसाई जी के उद्देश्यपूर्ण परामर्शों के आधार पर तथा भवन-निर्माण हेतु 'नंदन गोपी लिमिटेड' की सेवाएँ प्राप्त करते हुए भारत सरकार ने 3, 262 वर्ग मीटर का भव्य भवन निर्मित किया।

आज यह भवन विश्व हिंदी सचिवालय के मुख्यालय के रूप में राहगीरों एवं पर्यटकों के लिए आकर्षण का केंद्र है और हिंदी प्रेमियों के लिए तो यह हिंदी की विशेष पावन स्थली है। भवन के भूतल पर स्वागत-कक्ष, सम्मेलन-कक्ष, ग्रंथालय, व्याख्यान-संगोष्ठी कक्ष, कंप्यूटर-प्रयोगशाला, बहुमाध्यम कक्ष, दस्तावेज़ एवं अनुसंधान-केंद्र और 160 सीटों का सभागार है। प्रथम तल पर महासचिव व उपमहासचिव के कक्षों के अतिरिक्त प्रशासन एवं प्रकाशन केंद्र, एक कार्यकारिणी कक्ष तथा अन्य दफ़्तर हैं। केंद्रीय भवन के बगल में अतिथि-गृह है, जहाँ देश-विदेश से विश्व हिंदी सचिवालय पहुँचकर हिंदी के वैश्विक विकास से संबंधित किसी महत्त्वपूर्ण योजना पर कार्य करने वाले हिंदी विद्वानों के आवास का प्रावधान किया गया है।

विश्व हिंदी सचिवालय के मुख्यालय के सामने इंदिरा गांधी भारतीय सांस्कृतिक केंद्र है और उसके ईर्द-गिर्द हैं-दो सरकारी माध्यमिक पाठशालाएँ, युवाओं के लिए एक भव्य क्रीड़ा-भवन, एक फ़ुटबॉल मैदान, एक विशाल व्यावसायिक केंद्र और लगभग 500 मीटर की दूरी पर एम.आई.टी.डी. हाउस है, जहाँ से शिक्षा व मानव संसाधन, तृतीयक शिक्षा एवं वैज्ञानिक अनुसंधान मंत्रालय का कुशल दिशा-निर्देश विश्व हिंदी सचिवालय को निरंतर प्राप्त होता है।

विश्व हिंदी सचिवालय का नवनिर्मित मुख्यालय निस्संदेह हिंदी के संवर्धन की अनंत संभावनाओं के नए द्वार खोल रहा है। यह हिंदी विद्वानों, लेखकों, प्रचारकों, प्राध्यापकों, शिक्षकों एवं छात्रों के लिए एक ऐसा मिलन-स्थल है, जहाँ एकजुट होकर हिंदी के उन्नयन हेतु ठोस कार्य करने की नवीन योजनाएँ बन रही हैं। सचिवालय के सभागार में हिंदी की बहुरंगी गतिविधियों का आयोजन करने, ग्रंथालय में विश्व के अलग-अलग देशों में प्रकाशित होने वाले हिंदी ग्रंथों, कोशों, समाचार-पत्रों तथा पत्रिकाओं की उपलब्धता बढ़ाने, दस्तावेज़ एवं अनुसंधान केंद्र में हिंदी के वैश्विक विकास संबंधी दस्तावेज़ों तथा महत्त्वपूर्ण शोधकृतियों को अनुसंधानकर्ताओं को प्राप्त कराने, भाषा-प्रयोगशाला में उच्चारण एवं भावार्थ की दृष्टि से हिंदी के सही प्रयोग का प्रशिक्षण प्रदान करने, हिंदी की पाठ्य-सामग्रियाँ तैयार करने तथा हिंदी में नए कोर्स प्रदान करने की दिशा में विश्व हिंदी सचिवालय विश्वासपूर्वक चल पड़ा है।

नए भवन और नई सुविधाओं की प्राप्यता के साथ ही सचिवालय अपने प्रकाशनों में वृद्धि करने की योजना भी बना चुका है। शीघ्र ही 'विश्व हिंदी पत्रिका' के अतिरिक्त वैश्विक हिंदी साहित्य का स्वरूप दर्शाने वाली नई पत्रिका 'विश्व हिंदी साहित्य' सुधी पाठकों के हाथों में होगी।

भारत एवं मॉरीशस सरकार ने जब भारी आर्थिक निवेश करते हुए विस्तृत संसाधनों की उपलब्धि करायी है, तब विश्व हिंदी सचिवालय के लक्ष्यों की संप्राप्ति करने के उत्साह में उत्तरोत्तर वृद्धि होना स्वाभाविक है। सचिवालय के निर्धारित कार्यों में जो कार्य पिछले दस वर्षों में संपन्न नहीं हो पाये हैं, उनको भी पूरा करने का उल्लास प्रबलतम हो चुका है।

डॉ. माधुरी रामधारी
उपमहासचिव

Printed by **Cathay Printing Ltd.**, La Tour Koenig Industrial Zone, Pointe aux Sables, Mauritius Tel : +230 234 2668